A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 12 जुलाई , 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 280, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

आकाश, बादल और पहाड़– उत्तराखंड में प्रकृति का विन्यास।

फोटो: गिरीश शर्मा

सुप्रभात

मैं चांद से मिलकर लौटा हूं
चांदनी संग संग
मेरे घर तलक चली आई
थोड़ी सी चांदनी बिछाई
और कुछ ओढ़ली मैंने
नींद तितली बनी
मंडराती रही रात-भर
और फिर सुबह हो गई ।
मैं शुक्रगुजार हूं
चांद का, चांदनी का
और तितली का
कि जगाए रक्खा है सबने मुझे
बड़े ही जतन से
अब मैं
खुली-खुली आंखों से
दुनिया देखता हूं।

- यूसुफ़ जावेदी

पीएम ने ऑकलैंड के मंच से दिखाया 25 साल पुराना मफलर

● भारतीय समुदाय को बताई न्यूजीलैंड कनेक्शन की दिलचस्प कहानी ● पीएम बोले-यहीं मुझे गिफ्ट में मिला था, आज भी संभालकर रखा है ● कहा-हमारे लिए देश की जनसंख्या नहीं

ऑकलैंड (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार को न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। इस दौरान पीएम ने करीब तीन दशक पुराना किस्सा सुनाया। पीएम ने कहा- 25-30 साल पहले जब मैं किसी सरकार का हिस्सा नहीं था, तब मुझे यहां आने का मौका मिला था। उस समय मुझे किसी ने गिफ्ट में 3 चीजें दीं, जो मैं भारत लेकर गया। एक- मफलर, दूसरी- कैप और तीसरा- एक सेट दस्ताना। उसमें भी एक चीज मैं अभी यहां इस कार्यक्रम में भी लेकर आया हूं। इस मफलर को मैंने कई बार इस्तेमाल किया और आज भी संभाल कर रखा है। पीएम ने आगे कहा कि हमारे लिए सामने वाले देश की जनसंख्या नहीं, जनकल्याण की भावना मायने रखती है। और इसलिए हमने न्यूजीलैंड से भी बहुत कुछ सीखा है और अब भी सीख रहे हैं।

ये कोलेब का जमाना है,दोनों देश साथ

पीएम ने कहा अगर हम कंटेंट क्रिएटर्स की भाषा में बात करें तो ये कोलेब का जमाना है। दोनों देश स्पोर्ट्स में भी बहुत शानदार कोलेब कर सकते हैं। रग्बी इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। भारत रग्बी में न्यूजीलैंड से सीखना चाहता है। हमें कोच चाहिए, एक्सपर्ट चाहिए। न्यूजीलैंड हमारी बहुत मदद कर सकता है।

- **चंद्रयान की लैंडिंग पर न्यूजीलैंड नाच रहा था–** भारत और न्यूजीलैंड का भविष्य जुड़ा है। स्पेस से सेक्टर इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। भारत का चंद्रयान जब मून के साउथ पोल पर लैंड किया तो न्यूजीलैंड नाच रहा था। उस दिन हमें गर्व हुआ। यहां की स्पेस कंपनियों ने कई बार हमारे साथ मिलकर काम किया है।
- **हजारों किमी की दूरी, मगर दिल में हिंदुस्तान–** हजारों किमी दूर रहते हुए भी आपके दिल के किसी कोने में कहीं न कहीं हिंदुस्तान बसता ही है। शरीर यहां होगा मन भारत में होगा। इसलिए आप भारत की हर उपलब्धि पर भी नजर रखते हैं।
- **देश की जनसंख्या नहीं, जनकल्याण भावना अहम–** हमारे लिए सामने वाले देश की जनसंख्या नहीं, जनकल्याण की भावना मायने रखती है। और इसलिए हमने न्यूजीलैंड से भी बहुत कुछ सीखा है और अब भी सीख रहे हैं। यह वो देश है जिसने सबसे पहले महिलाओं को वोटिंग का अधिकार दिया था। न्यूजीलैंड आने में अब 40 नहीं लगेंगे।

स्कूली शिक्षा में ड्रॉप-आउट दर हुई शून्य

हमारे सांदीपनि विद्यालय मॉडल की देश में हो रही है सराहना: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि शिक्षा ही समाज में परिवर्तन लाने का सबसे बड़ा और सशक्त माध्यम है। हमारी सरकार बच्चों को विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करने के लिए संकल्पित हैं। हमारे बच्चे खूब पढ़ें, लिखें, जीवन में आगे बढ़े, इसके लिए हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप बच्चों को आधुनिक तरीके से गुणवत्तापूर्ण, रोजगारोन्मुख और संस्कारयुक्त शिक्षा दिलाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे सांदीपनी विद्यालय, पीएमश्री स्कूल और प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस के रूप में प्रदेश में शिक्षा की त्रिवेणी बन रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश ने प्राथमिक स्कूली शिक्षा स्तर पर ड्रॉप-आउट दर को शून्य करने की ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली है। हमारे सांदीपनि विद्यालय मॉडल की पूरे देश में सराहना हो रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को इन्दौर में हिन्द रक्षक पुण्योदय प्रकल्प के कार्यक्रम में शामिल होकर स्कूली छात्राओं को राष्ट्र के महापुरुषों के जीवन चरित्र पर केन्द्रित निःशुल्क पुस्तकें एवं कॉपियां वितरित की। मुख्यमंत्री ने स्कूली छात्राओं से संवाद कर से उन्हें स्नेहपूर्वक खूब तरक्की करने का शुभाशीष भी दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस वर्ष बोर्ड परीक्षाओं में हमारे सरकारी विद्यालयों ने शानदार प्रदर्शन किया है। सरकारी विद्यालयों का रिजल्ट प्राइवेट विद्यालयों से बेहतर रहा। उन्होंने कहा कि इस वर्ष बोर्ड के परीक्षा परिणामों में हमारे सांदीपनी विद्यालयों के 58 विद्यार्थियों ने राज्य स्तरीय मेरिट लिस्ट में जगह बनाई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राजनीति से ज्यादा राष्ट्रहित सर्वोपरि एवं राष्ट्र प्रथम की नीति को केंद्र में रखते हुए समाज सुधार और लोगों को प्रेरित करने वाले अनेक कार्य हो रहे हैं। हिंद रक्षक संगठन के संस्थापक और जननेता स्व. लक्ष्मण सिंह गौड़ (लखन दादा) युवा शक्ति के प्रेरणा स्त्रोत थे। उन्होंने समाज की बेहतरी के लिए तत्कालीन सरकार के कुशासन के खिलाफ आवाज उठाई, मुझे भी उनका सहयोगी बनने का सौभाग्य मिला। आज स्व. गौड़ की 68वीं जयंती पर पुण्योदय प्रकल्प के जरिए हर साल 60 हजार से अधिक विद्यार्थियों को कॉपी-किताबें और महापुरुषों के प्रेरक जीवन प्रसंगों पर केन्द्रित पुस्तकें बांटी गई हैं। हिंद रक्षक प्रकल्प का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता से आज भी समाज को प्रेरणा मिलती है। हमारे युवा इससे प्रेरणा लें और गरीब-जरूरतमंदों मित्रों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहें। राज्य सरकार ने गुरु पूर्णिमा महोत्सव को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है।

आज लाड़ली बहनों को मिलेगी 38वीं किश्त की सौगात

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार को जिला भिंड के लहार में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के तहत प्रदेश की लगभग 1 करोड़ 25 लाख 15 हजार से अधिक बहनों के खातों में सिंगल क्लिक से 1835 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का सीधा अंतरण करेंगे। मध्यप्रदेश सरकार की इस अत्यंत लोकप्रिय योजना के अंतर्गत लाभार्थी महिलाओं को योजना की शुरुआत से अब तक की 38वीं नियमित मासिक किश्त का भुगतान किया जाएगा। राज्य सरकार द्वारा माह नवंबर 2025 से इस मासिक आर्थिक सहायता राशि में 250 रुपये की बढ़ोतरी किए जाने के बाद से सभी पात्र हितग्राही महिलाओं को प्रति माह 1,500 रुपये की निरंतर वित्तीय सहायता मिल रही है।

दतिया उपचुनाव में नरोत्तम का टिकट कटने पर बवाल

● एसपी समेत 8 पुलिसकर्मी घायल,जिले में धारा 163 लागू ● विजयवर्गीय बोले-आशुतोष ही जीतेंगे, टिकट नहीं बदलेगा

भोपाल (नप्र। मध्य प्रदेश की दतिया विधानसभा सीट पर 30 जुलाई को चुनाव होना है। यहां से भाजपा ने आशुतोष तिवारी को उम्मीदवार बनाया है। शुक्रवार शाम यह खबर फैलते ही एमपी के पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा के समर्थक भड़क गए। उन्होंने हिंसक विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। कुछ देर में पथराव, चक्काजाम और पुलिस से झड़प शुरू हो गई। शनिवार सुबह प्रशासन ने पूरे जिले में बीएनएस की धारा 163 लागू कर दी। इसके तहत बिना अनुमति किसी भी सभा, जुलूस, धरना-प्रदर्शन और सार्वजनिक आयोजन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। साथ ही पांच या उससे अधिक लोगों के इकट्ठा होने पर भी रोक लगा दी गई है।

कैलाश बोले- टिकट घोषित होने के बाद बदलने की परंपरा भाजपा में नहीं– प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने दतिया विधानसभा उपचुनाव में भाजपा के भीतर चल रही नाराजगी पर कहा कि भाजपा लोकतांत्रिक पार्टी है। कार्यकर्ताओं को अपनी बात रखने का पूरा अधिकार है। उन्होंने विश्वास जताया कि संगठन सभी कार्यकर्ताओं से संवाद कर मतभेद दूर करेगा। भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी भारी मतों से जीतेंगे। विजयवर्गीय ने कहा- डॉ. नरोत्तम मिश्रा पार्टी के वरिष्ठ और समर्पित नेता हैं। संगठन के निर्णय का सम्मान करेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा में टिकट बदलने की परंपरा नहीं है।

पार्टी जो कहेगी वही करूंगा, किसी से कोई नाराजगी नहीं- नरोत्तम मिश्रा

दतिया विधानसभा उपचुनाव 2026 को लेकर सियासी गहमागहमी जारी है। इस बीच टिकट कटने और सियासी बवाल के बीच पूर्व मंत्री और भाजपा नेता नरोत्तम मिश्रा भोपाल पहुंच चुके हैं। उन्होंने अपने समर्थकों से धैर्य और संयम बनाए रखने की अपील की। डॉ. मिश्रा ने कहा कि कार्यकर्ता उनके अपने हैं और उन्हें धैर्य व संयम का परिचय देना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता अपनी बात पार्टी फोरम पर तय प्रक्रिया के अनुसार रखें। उन्हें पूरा विश्वास है कि सभी कार्यकर्ता उनकी बात मान जाएंगे।

भाजपा नेतृत्व से चर्चा के सवाल पर उन्होंने कहा कि जो भी बात होगी, सभी से चर्चा करेंगे। भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी के दतिया जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें जाना चाहिए। वहीं, नामांकन में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि मैं जरूर शामिल होऊंगा।

हालात बिगड़ने पर अतिरिक्त बल तैनात

शनिवार सुबह करीब 4.30 बजे हुए पथराव में एसपी, एसडीओपी और आठ पुलिसकर्मी घायल हो गए। वहीं नरोत्तम मिश्रा के कुछ समर्थकों के भी घायल होने की सूचना है। हालात बिगड़ने पर पुलिस ने अतिरिक्त बल तैनात किया। बताया गया कि कुछ समर्थकों ने भाजपा कार्यालय में खुद को बंद कर लिया था, जिन्हें बाद में प्रशासन की समझाइश के बाद बाहर निकाला गया। बड़ौनकलां में जाम की सूचना के बाद प्रशासन ने एहतियातन दतिया स्थित भाजपा कार्यालय में करीब 250 कार्यकर्ताओं को अंदर ही रोक दिया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 12 जुलाई 2026

" जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति "

संक्षिप्त समाचार

सीएम योगी का कुशीनगर की धरती से सपा को संदेश

● मंदिरों पर कब्जा कराते थे, आज हमें आईना दिखा रहे

कुशीनगर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष पर चुन-चुनकर हमला किया। योगी ने कहा कि आज हर धर्म के लोग अपना त्योहार मना रहे हैं। सपा सरकार में दुर्गा पूजा के समय प्रतिमा नहीं रखने दी जाती थी। होली पर रंग नहीं लगाने देते थे। डोल मेले पर रोक लगाते थे। ये लोग अयोध्या, मथुरा और काशी के बारे में कैसे सोचते थे। मंदिरों पर कब्जा कराते थे। अब मंदिरों पर कब्जा नहीं सुंदरीकरण हो रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कुशीनगर के रामकोला हाटा विधानसभा क्षेत्र की 525 करोड़ की 464 परियोजनाओं का शनिवार को लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सपा मंदिरों के सुंदरीकरण का पैसा कब्रिस्तान पर खर्च करती थी। आज हमें आईना दिखा रहे हैं, यह शोभा नहीं देता है। आज हर जगह विकास हो रहा है। कुशीनगर की एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी शुरू होने वाली है। यहां टूरिज्म की अपार संभावनाएं हैं।

रेप के आरोपी ने जमानत मिलते ही कीं 6 हत्याएं

पहले पत्नी-बच्चों, फिर पीड़ित और उसके परिवार को मार डाला

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के रंगा रेड्डी जिले में नाबालिग से रेप के एक आरोपी ने शुक्रवार रात जमानत पर बाहर आते ही 6 हत्याएं कर दीं। पहले उसने अपनी 30 साल की पत्नी, 4 साल और 18 महीने के दो बेटों की हत्या की। इसके बाद वह करीब 6 किलोमीटर दूर दूसरे गांव पहुंचा। जहां उसने 17 साल की रेप पीड़ित, उसकी मां और नानी को भी मार दिया।

लड़की ने 16 मई को पॉक्सो एक्ट के तहत आरोपी राजकुमार के खिलाफ रेप का केस दर्ज कराया था।

परिवार बोला- पहले ही मारने की धमकी दी थी लड़की के मामा नरेश ने बताया, उसने मेरी चाची और भांजी की हत्या कर दी। उसने पहले भी लड़की को परेशान किया था और उस पर पॉक्सो के तहत मामला दर्ज किया गया। उसने धमकी दी थी वह एक-दो हफ्ते में पूरे परिवार को मार डालेगा। मामला दर्ज होने के बाद भी उसे पूछताछ या रिमांड के लिए नहीं ले जाया गया। उसके परिवार को पता था कि वह कहां है, लेकिन पुलिस को जानकारी नहीं थी और मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।

ट्रेन के आगे कूदा किसान, दो टुकड़ों में बंटा

ग्वालियर (नप्र)। मध्यप्रदेश के ग्वालियर में कथित सूदखोरों की धमकियों से परेशान एक किसान ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। शव दो टुकड़ों में बंटा मिला। मृतक की पहचान मुरार के त्यागी नगर निवासी तिलक सिंह राणा के रूप में हुई है। पुलिस को उनके पास से सुसाइड नोट मिला है, जिसमें उन्होंने जीजा-साले समेत तीन लोगों को अपनी मौत का जिम्मेदार ठहराया है। परिजनों का आरोप है कि कर्ज चुकाने के बावजूद आरोपी लगातार धमका रहे थे और घर में घुसकर मारने की बात कह रहे थे।

5 लाख उधार लिए, 3 लाख लौटा दिए- परिजनों के मुताबिक, तिलक सिंह ने करीब छह महीने पहले कल्ला शर्मा से 5 लाख रुपए उधार लिए थे। इनमें से 3 लाख रुपए लौटा दिए थे, लेकिन बाकी 2 लाख और भारी ब्याज के लिए लगातार दबाव बनाया जा रहा था। उनका कहना है कि पहले 3 टका ब्याज तय हुआ था, लेकिन बाद में 20 टका ब्याज मांगा जाने लगा।

मारपीट और जान से मारने की धमकी का आरोप- परिजनों का आरोप है कि रुपए नहीं देने पर आरोपियों ने तिलक के साथ मारपीट की और घर में घुसकर जान से मारने की धमकी दी। गुरुवार को भी उन्हें धमकाया गया था। इसी मानसिक दबाव के चलते शुक्रवार को तिलक एजी ऑफिस पुल के नीचे रेलवे ट्रैक पर पहुंचे और ट्रेन के सामने कूद गए।

सुसाइड नोट में लिखी मौत की वजह- पुलिस को मिले सुसाइड नोट में तिलक ने लिखा है कि उन्होंने 5 लाख रुपए उधार लिए थे और 3 लाख वापस कर दिए थे। इसके बावजूद बचे हुए पैसों और ब्याज के लिए लगातार प्रताड़ित किया जा रहा था। उन्होंने लिखा कि आरोपियों की धमकियों से तंग आकर वह यह कदम उठा रहे हैं और उनकी मौत के जिम्मेदार जितेंद्र शर्मा, उसका साला कल्ला शर्मा तथा गजेन्द्र हैं।

मृतक के बेटे अजीत सिंह का कहना है कि पिता पर लगातार दबाव बनाया जा रहा था। 3 लाख रुपए लौटाने के बाद भी आरोपी बचे हुए पैसों पर 20 प्रतिशत ब्याज मांग रहे थे।

स्वदेशी मिसाइल-सेंसर से लैस | महेंद्रगिरि नौसेना में हुआ शामिल

राजनाथ बोले- आंध्र प्रदेश बनेगा देश का ड्रोन हब

विशाखापत्तनम (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम नेवल डॉकयार्ड में आईएनएस महेंद्रगिरि को भारतीय नौसेना में शामिल (कमीशन) किया। महेंद्रगिरि प्रोजेक्ट-17ए की नीलगिरि कैटेगरी का छठा स्टेल्थ फ्रिगेट (युद्धपोत) है। इसे बनाने में 75 फीसदी से ज्यादा स्वदेशी उपकरण और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। आईएनएस महेंद्रगिरि स्वदेशी अत्याधुनिक हथियारों, सेंसर और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम से लैस है। यह हवाई हमलों, दुश्मन के जहाजों और पनडुब्बियों से एक साथ मुकाबला करने में सक्षम है। यह हिंद महासागर में भारत की समुद्री सुरक्षा को और मजबूत करेगा। राजनाथ सिंह ने कहा कि आंध्र प्रदेश के कुरनूल में आठ ड्रोन कंपनियों के समूह के साथ ड्रोन सिटी विकसित की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिस तरह सूरत डायमंड सिटी और बेंगलुरु सिलिकॉन वैली के नाम से जाना जाता है, उसी तरह आने वाले समय में कुरनूल देश का ड्रोन हब बनेगा।

● **पर्वतों-नदियों के नाम पर युद्धपोतों के नाम रखे-** आईएनएस महेंद्रगिरि का नाम जिस महेंद्रगिरि पर्वत पर रखा गया है, उसका धार्मिक महत्व भी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह पर्वत भगवान परशुराम की तपस्थली थी। रामायण में भी इसका उल्लेख मिलता है। भारतीय नौसेना अपनी कई युद्धपोतों के नाम देश के ऐतिहासिक पर्वतों, नदियों और विरासत से जुड़े स्थलों पर रखती है, जिससे सैन्य परंपरा का मान मिलता है।

75 फीसदी से ज्यादा स्वदेशी तकनीक

इसे भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो ने डिजाइन किया है और मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने तैयार किया है। युद्धपोत में 75 फीसदी से ज्यादा स्वदेशी उपकरण और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इसके निर्माण में देशभर की कई कंपनियों ने भी योगदान दिया है, जिससे रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिलने के साथ रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। महेंद्रगिरि में आधुनिक सरफेस-टू-सरफेस और सरफेस-टू-एयर मिसाइल सिस्टम, एडवांस इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम, एंटी-सबमरीन वॉरफेयर सिस्टम और इंटीग्रेटेड कॉम्बैट मैनेजमेंट सिस्टम लगाए गए हैं। महेंद्रगिरि में उन्नत स्टेल्थ तकनीक दी गई है, जिससे इसकी रडार पर पहचान करना मुश्किल होगा। इसमें कम्बाइंड डीजल और गैस प्रोपल्शन सिस्टम लगाया गया है, जो इसे लंबी दूरी तक तेज गति से संचालन की क्षमता देता है।

वियतनाम में टूरिस्ट बोट पलटी, 15 भारतीयों की मौत

● 32 भारतीय सवार थे, इनमें ज्यादातर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के पर्यटक

हनोई (एजेंसी)। वियतनाम के फु क्वोक द्वीप के पास शनिवार को बोट पलट गई। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, इनमें से 32 भारतीय थे। 15 भारतीयों की मौत हो गई। ज्यादातर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के पर्यटक थे। बोट पर कुल 4 क्रू मेंबर्स समेत 36 लोग सवार थे। 21 लोगों को बचा लिया गया है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक हादसा सुबह 10.30 बजे हुआ। हादसे की वजह ऊंची लहरें प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, हादसे की वजह समुद्र की ऊंची लहरें हो सकती हैं। जो वीडियो सामने आए, उनमें लहरें उठती दिख रही हैं। बताया जा रहा है कि टूरिस्ट लाइफ जैकेट नहीं पहने हुए थे। नाव जब पलटी तो टूरिस्ट नाव के नीचे फंस गए। बोट भारतीय पर्यटकों को फु क्वोक द्वीप के पास स्थित 'होन मे रुट' से न्गोआई द्वीप घुमाने ले जा रही थी, लेकिन यह तट से लगभग 400 मीटर पहले ही पलट गई।

खतरे की घंटी! दुनिया के 50 सबसे गर्म शहरों में लखनऊ और कानपुर

● लिस्ट में भारत, पाकिस्तान, नाइजीरिया और घाना के सबसे अधिक शहर

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश के लखनऊ और कानपुर दुनिया भर के उन 50 शहरों की लिस्ट में शामिल हैं जहां भीषण गर्मी का खतरा है। इस लिस्ट में भारत के 14 शहर शामिल हैं। दुनिया के 205 बड़े शहरों के विश्लेषण से पता चला है कि, भारत, पाकिस्तान, नाइजीरिया और घाना में भीषण गर्मी के खतरे वाले सबसे ज्यादा शहर हैं। इन 50 शहरों में प्रमुख पर्यटन स्थल भी शामिल हैं। लखनऊ और कानपुर उन 14 भारतीय शहरों में शामिल हैं जो कि दुनिया के 50 सबसे ज्यादा गर्मी के खतरे वाले शहरों में हैं।

● **लिस्ट में अहमदाबाद दूसरे नंबर पर-** जर्नल सस्टेनेबल सिटीज एंड सोसाइटी में एक अध्ययन रिपोर्ट प्रकाशित की गई है। इसके अनुसार, इराक का अल बसरा शहर दुनिया में गर्मी के सबसे ज्यादा खतरे वाला शहर है। इसके बाद गुजरात का अहमदाबाद है। इस स्टडी में उन जगहों की पहचान की गई है जहां धरती के गर्म होने के साथ लोगों को सबसे अधिक खतरा है। इन शीर्ष 50 खतरे वाले शहरों में शामिल 14 भारतीय शहरों में महाराष्ट्र के नागपुर और पुणे भी शामिल हैं।

● **गर्मी से निपटने की क्षमता सीमित-** ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की रिसर्चर और मुख्य लेखक नेथमी जयारत्ने करियावसम के अनुसार, खतरे के लिए सिर्फ अधिक तापमान का सामना करना ही मायने नहीं रखता। हमारी स्टडी कई तरह से गर्मी से जुड़े खतरों के आंकलन के महत्व को बताती है। इससे पता चलता है कि शहरी इलाकों में गर्मी का खतरा किन अलग-अलग तरीकों से पैदा होता है। करियावसम ने कहा, कई बड़े शहरों में, खासकर एशिया और अफ्रीका में, भीषण गर्मी के साथ-साथ लोगों की कमजोरी और उससे निपटने की सीमित क्षमता भी दिखी।

यह पार्टी का फैसला है, ऐसा बवाल न काटें

हंगामे के बीच सामने आए नरोत्तम मिश्रा, समर्थकों से की अपील

भोपाल/दतिया (नप्र)। मध्य प्रदेश की दतिया और डबरा सीट पर होने वाले आगामी उपचुनाव के लिए बीजेपी से टिकट कटने के बाद मचे भारी बवाल पर आखिरकार पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा का बड़ा बयान सामने आया है। समर्थकों द्वारा सोशल मीडिया पर पेट्रोल और केरोसिन डालकर आत्मदाह की कोशिश करने वाले वीडियो वायरल होने के बाद नरोत्तम मिश्रा ने अपनी चुप्पी तोड़ी है। उन्होंने बेहद गंभीर लहजे में कार्यकर्ताओं से किसी भी तरह का उग्र कदम न उठाने की भावुक अपील की है। नरोत्तम मिश्रा ने साफ कहा कि टिकट न मिलना पार्टी आलाकमान का निर्णय है और सभी कार्यकर्ताओं को इसका सम्मान करना चाहिए।

सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो से दुखी हुए नरोत्तम- टिकट न मिलने से नाराज कार्यकर्ताओं ने ग्वालियर-दतिया अंचल में कई जगह चक्काजाम और हिंसक प्रदर्शन शुरू कर दिए थे। इस पर डबरा में मीडिया से बात करते हुए नरोत्तम मिश्रा ने कड़ा संदेश दिया। इस सियासी संकट के बीच एक बार फिर उनके पास मौजूद करोड़ों की संपत्ति और रसूख की चर्चा तेज हो गई है। यह पूरी तरह से पार्टी का निर्णय है। मैं सभी पार्टी कार्यकर्ताओं से अपील करता हूं, विशेषकर सोशल मीडिया पर जो पेट्रोल या केरोसिन डालने वाले वीडियो सामने आ रहे हैं, वैसी हरकतें बिल्कुल न करें। पार्टी फोरम में अपनी बात रखने का एक सही तरीका होता है, इस तरह सड़कों पर बवाल करके बातें नहीं पहुंचाई जातीं। पार्टी के लिए अपनी वफादारी दिखाने वाले नरोत्तम मिश्रा की 2023 के चुनावी हलफनामे के मुताबिक, कुल संपत्ति 6 करोड़ 84 लाख 14 हजार 884 रुपये है। इस कद्दावर नेता के प्रोफाइल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि करोड़ों के एसेट्स होने के बाद भी उनके नाम पर कोई निजी कार पंजीकृत नहीं है।

बारुईपुर हिंसा में मारे गए इंद्रजीत के परिजनों को मिलेंगे 25 लाख

● भाई को नौकरी भी देगी सरकार

कोलकाता (एजेंसी)। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी शनिवार को दक्षिण 24 परगना के बारुईपुर में दुष्कर्म व हत्या की शिकार नाबालिग के परिवार के साथ भीड़ की पिटाई में मारे गए इंद्रजीत मंडल के स्वजन से मुलाकात की। इंद्रजीत के परिवार को 25 लाख रुपये की आर्थिक सहायता का चेक सौंपा गया। उनके बड़े भाई को सूर्यपुर पुलिस चौकी में सिविक वालंटियर की नौकरी भी दी गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पीड़ित बच्ची के परिवार के साथ भी पूरी तरह खड़ी है। इस दौरान शुभेंदु अधिकारी ने सूर्यपुर में नई पुलिस चौकी का उद्घाटन भी किया। उन्होंने बताया कि नाबालिग के स्वजन ने चार दिन पहले पुलिस चौकी की मांग की थी, जिसे रिकार्ड समय में पूरा किया गया।

● **रेलवे लाइन को नुकसान पहुंचाने वाले राष्ट्रविरोधी-** मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि रेलवे लाइन को नुकसान पहुंचाने वाले लोग राष्ट्रविरोधी हैं और उन्हें दंड मिलना चाहिए। साथ ही उन्होंने पुलिस को निर्देश दिया कि निर्दोष लोगों को किसी प्रकार की प्रताड़ना का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि डर केवल हत्यारों, दुष्कर्मियों और तोड़फोड़ करने वालों को होना चाहिए, आम लोगों को नहीं। मुख्यमंत्री ने कामदुनी दुष्कर्म और हत्या मामले का भी उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य सरकार अब सुप्रीम कोर्ट में पीड़ित परिवार का कानूनी सहयोग करेगी।

वन नेशन वन इलेक्शन | 2029 से लागू हो सकता है

● संसदीय समिति के अध्यक्ष बोले- 99 फीसदी लोग पक्ष में

● अब राज्यों के विशेषज्ञों से सलाह ले रहे, जल्द होगा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) कोशिश कर रही है कि 2029 के लोकसभा चुनावों तक 'वन नेशन वन इलेक्शन' लागू हो सके। समिति के अध्यक्ष पीपी चौधरी के मुताबिक, अब तक चर्चा में शामिल लगभग 99 फीसदी नागरिक और संगठनों ने इसका समर्थन किया है। समिति ने गोवा के मुख्यमंत्री और कैबिनेट मंत्रियों सहित कई राज्यों के विशेषज्ञों से इस पर सलाह ली है। गोवा दौरे पर गए समिति के सदस्य और भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को कहा कि बार-बार चुनाव से छोटे राज्य गोवा पर इतना प्रभाव पड़ता है, तो बड़े राज्यों और पूरे देश पर इसका असर और भी ज्यादा होता होगा। उन्होंने बताया कि समिति का अगला दौरा लखनऊ का होगा, जहां मुख्यमंत्री, विपक्ष के नेता, राजनीतिक दलों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों से चर्चा की जाएगी।

● **संविधान में गुंजाइश है, लेकिन सहमति पर जोर-** लॉ कमीशन के पूर्व सदस्य और मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के लॉ कॉलेज के डीन आनंद पालीवाल ने कहा कि एक देश-एक चुनाव को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए संवैधानिक विकल्प मौजूद हैं। कुछ राज्यों में विधानसभा का कार्यकाल पूरा होने से पहले चुनाव कराए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों में कार्यकाल बढ़ाने के विकल्प भी हैं। भारत में पहले भी विशेष परिस्थितियों में लोकसभा और विधानसभाओं के कार्यकाल में बदलाव किए गए हैं। हालांकि किसी भी व्यापक बदलाव के लिए संसद द्वारा आवश्यक कानूनी प्रावधान और राजनीतिक सहमति जरूरी होगी। एक राष्ट्र-एक चुनाव पर विचार करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता में 2 सितंबर 2023 को एक पैनल का गठन किया गया था। इस पैनल ने हितधारकों-विशेषज्ञों के साथ चर्चा और 191 दिनों के शोध के बाद 14 मार्च को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपनी रिपोर्ट सौंपी थी।

सभी मैसेजिंग एप्स को लेकर एक जैसे नियम बनाने का प्लान

वाट्सएप विवाद के बीच एक्शन में मोदी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार मैसेजिंग प्लेटफॉर्म के लिए एक जैसे नियम बनाने पर विचार कर रही है। सरकार को वाट्सएप के प्रस्तावित यूजरनेम फीचर को लेकर चिंता है। अधिकारियों को डर है कि इससे किसी और का रूप धरने ऑनलाइन धोखाधड़ी और डिजिटल अरेस्ट स्कैम का खतरा बढ़ सकता है। सूत्रों के मुताबिक इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय देश में चल रही मैसेजिंग सेवाओं के लिए कॉमन स्टैंडर्ड्स (मानक) बनाने पर काम कर रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस कदम का मकसद यह पक्का करना है कि सभी प्लेटफॉर्म्स पर एक जैसे नियम लागू हों और उनके फीचर्स को लेकर सरकार के फैसलों को स्पष्ट कानूनी आधार मिले। मंत्रालय वाट्सएप के प्रस्तावित यूजरनेम फीचर का औपचारिक रूप से विरोध करने की भी तैयारी कर रहा है। उसे चिंता है कि इससे कानून लागू करने वाली एजेंसियों के लिए अपराधों की जांच करना मुश्किल हो सकता है। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों के मुताबिक इस फीचर को लाने के पक्ष में नहीं हैं। भारत में इसके बहुत बड़े यूजर बेस को देखते हुए, यूजरनेम से अरेस्ट स्कैम बढ़ सकते हैं।

● **अभी नहीं है कोई साफ नियम-** सरकार मैसेजिंग प्लेटफॉर्म के लिए एक जैसे नियम बनाना चाहती है। अधिकारियों का मानना है कि अभी नियमों में कुछ कमी है, इसलिए सरकार सभी के लिए एक जैसे नियम लाने की कोशिश कर रही है। अभी, अधिकारी किसी प्लेटफॉर्म को कोई खास फीचर लाने से रोक सकते हैं, भले ही दूसरी कंपनियां भी वैसी ही सुविधाएं दे रही हों, जबकि ऐसा करने या न करने के बारे में कोई साफ नियम नहीं है।

● **ताकि मिल सके कानूनी आधार-** हम मैसेजिंग प्लेटफॉर्म के लिए कॉमन स्टैंडर्ड्स लाने पर भी विचार कर रहे हैं, ताकि ऐसे फैसलों को कानूनी आधार मिल सके। ऐसा नहीं हो सकता कि हम किसी एक प्लेटफॉर्म को कोई फीचर लाने से रोकें, जबकि दूसरे प्लेटफॉर्म को वही फीचर देने की इजाजत दें। नियम सभी के लिए एक जैसे होने चाहिए। कोई भी फाइनल फैसला लेने से पहले हम सभी के साथ इस पर चर्चा करेंगे।

बिहार के विधायकों को भी मिलेगी 'एआई' की ट्रेनिंग

सीएम सम्राट ने कहा- जल्द शुरू होगा एक ट्रेनिंग सेशन

गयाजी (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने शनिवार को कहा कि लोकतंत्र की मजबूती जनप्रतिनिधियों की सक्रियता और जवाबदेही पर निर्भर करती है। उन्होंने विधायकों से आह्वान किया कि वे विधानसभा की कार्यवाही और संसदीय प्रक्रियाओं का अधिकतम उपयोग करते हुए जन समस्याओं को प्रभावी ढंग से सरकार तक पहुंचाएं। सम्राट चौधरी ने बदलते तकनीकी दौर का उल्लेख करते हुए बिहार विधानसभा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने की आवश्यकता जताई। गया जी बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड रूरल डेवलपमेंट (बिपार्ड) में में उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपने क्षेत्र की समस्याओं, अपेक्षाओं और सुझावों को सदन के माध्यम से सरकार तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि प्रश्नकाल, शून्यकाल, ध्यानाकर्षण, कटौती प्रस्ताव और अन्य संसदीय उपकरण केवल औपचारिक प्रक्रियाएं नहीं हैं, बल्कि लोकतंत्र में जनता की आवाज को मजबूती देने के प्रभावी माध्यम हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज पूरी दुनिया तेजी से बदल रही है और तकनीक का महत्व बढ़ रहा है।

ऑनलाइन खरीदारी और फर्जी पुलिस अधिकारी बनकर 1.72 लाख की ठगी

झांसा देकर 82 हजार ठगे, बेटे की गिरफ्तारी का डर दिखाकर ठगी

इंदौर। शहर में साइबर ठगी के दो अलग-अलग मामलों में बदमाशों ने लोगों को अलग-अलग तरीकों से निशाना बनाकर कुल 1.72 लाख रुपए की ठगी कर ली। दोनों मामलों में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एक मामले में इंडिया मार्ट के जरिए एसी गैस बेचने का झांसा देकर ऑटो पार्ट्स व्यापारी से 82 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर करा लिए गए, जबकि दूसरे मामले में खुद को पुलिस अधिकारी बताकर बेटे को दुष्कर्म के मामले में गिरफ्तार किए जाने की झूठी जानकारी देकर 90 हजार रुपए वसूल लिए गए। छोटी ग्वालटोली थाना पुलिस के अनुसार फरियादी पवनदीप सिंह खनूजा, रानी बाग निवासी हैं और किबे कंपाउंड में खनूजा इंटरप्राइजेज के नाम से ऑटो पार्ट्स का कारोबार करते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि 2 जून को उन्हें एसी गैस की जरूरत थी। इसके लिए उन्होंने इंडियामार्ट पर नंबर तलाशा, जहां श्रुति इंटरप्राइजेज के नाम से कुलदीप अग्रवाल का मोबाइल नंबर मिला। दोनों के बीच बातचीत हुई, जिसके बाद आरोपी ने वॉट्सऐप पर एसी गैस के टिन की तस्वीर और 220 पीस का इनवॉइस भेजा। इसमें माल की कीमत 82 हजार रुपए बताई गई।

बेटे की गिरफ्तारी का झूठ बोला – दूसरा मामला कनाड़िया थाना क्षेत्र का है। यहां राज वर्मा ने साइबर ठगी की शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने पुलिस को बताया कि 1 जुलाई की सुबह उनके पास वॉट्सऐप कॉल आया। कॉल करने वाले ने खुद को पुलिस अधिकारी बताते हुए कहा कि उनके बेटे को दुष्कर्म के आरोप में तीन अन्य युवकों के साथ गिरफ्तार किया गया है। इसके बाद आरोपी ने बेटे की जमानत कराने के नाम पर तत्काल 3 लाख रुपए की मांग की और रुपए नहीं देने पर जेल भेजने की धमकी दी।

बेटे से बात की तो पोल खुली – राज वर्मा घबरा गए और उन्होंने बताया कि उनके पास फिलहाल 90 हजार रुपए ही हैं। इसके बाद ठगों ने बताए गए बैंक खाते में यह राशि ट्रांसफर करा ली। कुछ देर बाद जब उन्होंने अपने बेटे से संपर्क किया तो पता चला कि वह पूरी तरह सुरक्षित है और उसके साथ ऐसी कोई घटना नहीं हुई। तब उन्हें एहसास हुआ कि वे साइबर ठगी का शिकार हो चुके हैं।

खातों और नंबरों की जांच– दोनों मामलों में साइबर हेल्पलाइन पर मिली शिकायतों के आधार पर संबंधित थानों में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। पुलिस आरोपियों के बैंक खातों, मोबाइल नंबरों और अन्य तकनीकी साक्ष्यों की जांच कर रही है, ताकि ठगी करने वाले गिरोह तक पहुंचा जा सके। साथ ही लोगों से अपील की गई है कि ऑनलाइन भुगतान करने से पहले संबंधित व्यक्ति और संस्था की पूरी तरह पुष्टि अवश्य करें तथा किसी भी धमकी भरे कॉल पर बिना सत्यापन के रुपए ट्रांसफर न करें।

मुंबई के खाते में जमा कराए

आरोपी ने भरोसा दिलाकर व्यापारी से मुंबई स्थित एक बैंक खाते में ऑनलाइन भुगतान करा लिया। रकम मिलने के बाद उसने गति इंटरप्राइजेज के नाम से बिल्टी भी भेज दी। बाद में जांच में पता चला कि यह बिल्टी कृत्रिम तकनीक की मदद से तैयार किया गया फर्जी दस्तावेज था। काफी समय तक सामान नहीं पहुंचने और आरोपी द्वारा फोन बंद कर देने पर पवनदीप सिंह खनूजा को ठगी का संदेह हुआ। इसके बाद 6 जून को उन्होंने बैंक में भुगतान रोकने का प्रयास किया और साइबर हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के आधार पर गुरुवार को छोटी ग्वालटोली थाना पुलिस ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया।

आईडीए की फर्जी एनओसी से नक्शा पास कराने की साजिश, 3 गिरफ्तार

भू-अर्जन अधिकारी की शिकायत पर प्रकरण दर्ज किया गया

इंदौर। इंदौर विकास प्राधिकरण (आईडीए) के नाम से फर्जी अनापत्ति प्रमाण-पत्र (एनओसी) तैयार कर आवासीय नक्शा स्वीकृत कराने की साजिश का तुकोगंज पुलिस ने पर्दाफाश किया है। मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। आरोपियों ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर नगर एवं ग्राम निवेश कार्यालय में पेश किए थे। पुलिस के अनुसार, आईडीए के भू-अर्जन अधिकारी की शिकायत पर थाना तुकोगंज में विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था।

जांच में सामने आया कि योजना क्रमांक 97/4, ग्राम हुकमाखेड़ी स्थित सर्वे नंबर 95/1/5/2, 95/1/5/3 एवं 96 की भूमि पर आवासीय नक्शा स्वीकृत कराने के लिए आईडीए अधिकारी के नाम से फर्जी एनओसी तैयार कर प्रस्तुत की गई थी। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने आजाद नगर निवासी सानिया शेख, शांतिदीप कॉलोनी निवासी राजा सिंह और निपानिया निवासी पंकज व्यास को गिरफ्तार किया। तीनों को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड लिया गया है।

अन्य की तलाश जारी

थाना प्रभारी जितेंद्र चौहान के नेतृत्व में गठित टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरोह का खुलासा किया। पुलिस अब रिमांड के दौरान अन्य संभावित आरोपियों की संलिप्तता और फर्जी दस्तावेज तैयार करने वाले नेटवर्क की जांच कर रही है। प्रकरण की विवेचना जारी है।

नाना पटवारी को नोटिस, ड्राइवर हिरासत में

इंदौर। एमडी ड्रग्स और ब्राउन शुगर तस्करी नेटवर्क की जांच में जुटी इंदौर पुलिस लगातार नए सुराग तलाश रही है। राजेंद्र नगर थाना पुलिस द्वारा गिरफ्तार ब्राउन शुगर तस्करों से

पूछताछ के बाद कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी के भाई नाना पटवारी एक बार फिर जांच के दायरे में आए हैं। पुलिस ने उन्हें दोबारा पूछताछ के साथ लिए नोटिस जारी किया है। वहीं, नाना पटवारी के ड्राइवर भुरू को भी पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। पुलिस कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर), मोबाइल डेटा और अन्य तकनीकी साक्ष्यों की भी जांच कर रही है। अधिकारियों के मुताबिक, ब्राउन शुगर के साथ गिरफ्तार इरफान उर्फ गोलू चंदेरी और संजय कौशल उर्फ रॉनी से पूछताछ में कई महत्वपूर्ण जानकारियां मिली हैं,जिनके आधार पर जांच का दायरा बढ़ाया गया है। डीसीपी नरेंद्र सिंह रावत ने बताया कि आरोपियों को न्यायालय से रिमांड पर लेकर पूछताछ की जा रही है। पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने और तथ्यों की पुष्टि के बाद ही मामले में आगे की जानकारी सार्वजनिक की जाएगी।

दतिया में टिकट बदलने का सवाल नहीं

इंदौर। दतिया उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी को लेकर जारी सियासी चर्चाओं के बीच प्रदेश के नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विश्वास जताया कि भाजपा उम्मीदवार आशुतोष तिवारी भारी मतों से जीत दर्ज करेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा में लोकतांत्रिक व्यवस्था है और कार्यकर्ता अनुशासित हैं। यदि किसी स्तर पर नाराजगी है तो बैठकर बातचीत से उसका समाधान कर लिया जाएगा। नरोत्तम मिश्रा के समर्थकों की नाराजगी पर मंत्री ने कहा कि यह पार्टी के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा हर निर्णय पूरी सोच-विचार के बाद लेती है और इसी वजह से पार्टी डंके की चोट पर चुनाव जीतेगी। विजयवर्गीय ने यह भी कहा कि नरोत्तम मिश्रा वरिष्ठ और समर्पित कार्यकर्ता हैं तथा वे भी पार्टी के लिए पूरी निष्ठा से काम करेंगे। उन्होंने कहा कि 230 विधानसभा सीटों पर हजारों दावेदार तैयारी करते हैं, लेकिन टिकट सभी को नहीं मिल सकता। पार्टी का निर्णय सर्वोपरि होता है और सभी कार्यकर्ताओं को उसका पालन करना चाहिए। भाजपा में टिकट बदलने की परंपरा नहीं रही है, इसलिए टिकट बदलने की संभावना नहीं है।

'एमओजी' के प्लॉट बेचने की फिर कोशिश

इंदौर। स्मार्ट सिटी कंपनी ने एमओजी लाइन पुनर्विकास परियोजना के तहत विकसित किए गए प्लॉट बेचने के लिए चौथी बार टेंडर जारी किए हैं। इससे पहले तीन बार टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बावजूद एक भी खरीदार सामने नहीं आया। अब कंपनी को उम्मीद है कि बदली हुई प्लानिंग और छोटे आकार के प्लॉट निवेशकों को आकर्षित करेंगे। स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत एमओजी लाइन क्षेत्र की सरकारी जमीन को खाली कराकर वहां मौजूद पुराने निर्माण हटाए गए। विभिन्न विभागों को वैकल्पिक भूमि आवंटित करने के बाद क्षेत्र में सड़क, ड्रेनेज और अन्य मूलभूत सुविधाओं का विकास किया गया। योजना के अनुसार यहां व्यावसायिक और बहुमंजिला विकास होना है, जिससे पूरे क्षेत्र की तस्वीर बदलने का दावा किया गया था। कंपनी ने इस बार पांच प्लॉट बिक्री के लिए निकाले हैं। इनमें चार प्लॉटों का आरक्षित मूल्य 36 करोड़ रुपये से अधिक रखा गया है। हालांकि रियल एस्टेट क्षेत्र से जुड़े जानकारों का मानना है कि मौजूदा लोकेशन और बाजार की स्थिति को देखते हुए इतनी बड़ी राशि का निवेश जोखिम भरा माना जा रहा है।

1.70 करोड़ की ठगी का शातिर गिरफ्तार

इंदौर। शहर के कपड़ा व्यापारियों से करीब 1.70 करोड़ रुपये के रेडीमेड गारमेंट्स और ड्रेस मटेरियल की धोखाधड़ी करने वाले गिरोह के मुख्य आरोपी मोहम्मद अकरम को इंदौर क्राइम ब्रांच ने हैदराबाद के चारमीनार क्षेत्र से गिरफ्तार किया है। आरोपी पर अकेले करीब 40 लाख रुपये का माल हड़पने का आरोप है। स्थानीय अदालत से ट्रांजिट रिमांड पर उसे इंदौर लाया गया है। डीसीपी राजेश त्रिपाठी ने बताया कि राजवाड़ा क्षेत्र के व्यापारी मुकेश जैन समेत 16 व्यापारियों ने शिकायत दर्ज कराई थी। आरोपियों ने खुद को बड़ी फर्मों का प्रतिनिधि बताकर 30 से 45 दिन में भुगतान का भरोसा दिलाया और उधार में माल मंगवाकर फरार हो गए। पुलिस पहले तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। अब मुख्य आरोपी से पूछताछ कर गिरोह के अन्य सदस्यों और वित्तीय लेन-देन की जानकारी जुटाई जा रही है।

जिला उपभोक्ता आयोग-2 के कार्यालय भवन की जर्जर स्थिति पर गंभीर चिंता

आईडीए बिल्डिंग की छत से कंक्रीट गिरने से अध्यक्ष की कार क्षतिग्रस्त

इंदौर। इंदौर विकास प्राधिकरण (आईडीए) के नवलखा कॉम्प्लेक्स स्थित जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग क्रमांक-2 के कार्यालय भवन की जर्जर स्थिति एक बार फिर गंभीर चिंता का विषय बन गई है। शुक्रवार को भवन के प्रथम तल से अचानक प्लास्टर एवं कंक्रीट का बड़ा हिस्सा नीचे गिर गया, जिससे आयोग के अध्यक्ष विकास राय का चार पहिया वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। घटना के समय सौभाग्यवश वहां कोई व्यक्ति मौजूद नहीं था, अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग क्रमांक-2 द्वारा इंदौर विकास प्राधिकरण के सम्पदा अधिकारी को भेजे गए लिखित शिकायत-पत्र में बताया गया है कि आयोग का कार्यालय आईडीए के नवलखा कॉम्प्लेक्स स्थित भवन में किराये पर संचालित हो रहा है। वर्तमान में न केवल आयोग का कार्यालय बल्कि सम्पूर्ण भवन अत्यंत जर्जर एवं दयनीय स्थिति में पहुंच चुका है, जिसके कारण प्रतिदिन दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। शिकायत के अनुसार पूर्व में भी भवन की खराब स्थिति के कारण दो-तीन आकस्मिक घटनाएं हो चुकी है, जिनमें अभिभाषकों, पक्षकारों तथा आयोग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सुरक्षा पर गंभीर खतरा उत्पन्न हुआ था। इन घटनाओं के बाद आयोग के न्यायालय अधीक्षक द्वारा कई बार इंदौर विकास प्राधिकरण को लिखित रूप से भवन के रखरखाव, मरम्मत एवं आवश्यक सुधार कार्य कराने का अनुरोध किया गया, लेकिन अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।

प्रथम तल से प्लास्टर गिरा

शुक्रवार को हुई ताजा घटना में शाम लगभग 4:10 बजे जब अधिकांश पक्षकार एवं अधिवक्ता आयोग परिसर से जा चुके थे, तभी प्रथम तल से प्लास्टर और कंक्रीट का भारी टुकड़ा अचानक नीचे आ गिरा। उस समय वहां कोई व्यक्ति मौजूद नहीं था, जिससे संभावित जनहानि टल गई। हालांकि, नीचे खड़ी आयोग के अध्यक्ष विकास राय की कार इस हादसे की चपेट में आ गई और उसे काफी नुकसान पहुंचा। घटना की जानकारी मिलते ही आयोग के सदस्य श्री लालजी तिवारी (94250-82967) ने तत्काल इंदौर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री परीक्षित झांडे (आईएएस) को पूरे घटनाक्रम से अवगत कराया। झांडे मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने तत्काल विशेषज्ञ इंजीनियर भेजकर घटनास्थल का निरीक्षण कराने का आश्वासन दिया है।

नागरिकों की सुरक्षा खतरे में

विकास राय ने बताया कि भवन की जर्जर स्थिति के कारण न केवल शासकीय कार्य प्रभावित हो रहे हैं, बल्कि प्रतिदिन अधिकारियों, कर्मचारियों, अधिवक्ताओं एवं आम नागरिकों की सुरक्षा भी खतरे में बनी हुई है। आयोग ने आशंका व्यक्त की है कि यदि समय रहते आवश्यक मरम्मत एवं संरचनात्मक सुधार नहीं किए गए तो भविष्य में कोई गंभीर दुर्घटना अथवा जनहानि हो सकती है। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग क्रमांक-2 ने इंदौर विकास प्राधिकरण से मांग की है कि किराये पर उपलब्ध कराए गए भवन का तत्काल तकनीकी निरीक्षण कराया जाए तथा आवश्यक मरम्मत एवं रखरखाव कार्य युद्धस्तर पर प्रारंभ कर भवन को सुरक्षित बनाया जाए, ताकि शासकीय कार्य सुचारू रूप से संचालित हो सके और किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना की पुनरावृत्ति न हो।

इंस्टाग्राम पर दोस्ती कर नाबालिग को ब्लैकमेल किया, गहने-नकदी हड़पे

अश्लील तस्वीरें वायरल करने की धमकी दी, आरोपी पकड़ाया

इंदौर। शहर के पंढरीनाथ थाना क्षेत्र में सोशल मीडिया के माध्यम से नाबालिग छात्रा को ब्लैकमेल कर उससे सोने के आभूषण और नकदी वसूलने का मामला सामने आया है। आरोपी ने इंस्टाग्राम पर दोस्ती करने के बाद छात्रा की तस्वीरों को संपादित कर अश्लील रूप दिया और उन्हें सोशल मीडिया पर प्रसारित करने की धमकी देकर लंबे समय तक उसे डराता रहा। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, मोती तबेला क्षेत्र में रहने वाली 16 वर्षीय छात्रा की फरवरी 2026 में पड़ोस में रहने वाले युवक नैतिक से इंस्टाग्राम पर पहचान हुई थी। दोनों के बीच लगातार बातचीत होने लगी और बाद में मोबाइल नंबर का भी आदान-प्रदान हुआ। इसके बाद दोनों के बीच वीडियो कॉल पर भी बातचीत होने लगी।

तस्वीरें संपादित कर धमकी

कुछ समय बाद आरोपी ने छात्रा की तस्वीरों को संपादित कर अश्लील बना दिया। इसके बाद उसने उन तस्वीरों को सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देते हुए छात्रा को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। लगातार मिल रही धमकियों के कारण छात्रा मानसिक दबाव में आ गई। धमकियों से डरी छात्रा ने 18 मार्च को अपनी मां के सोने के एक जोड़ी टॉप्स, एक जोड़ी झुमके और एक सोने की अंगूठी कागज में लपेटकर आरोपी को सौंप दिए। गहने लेने के बाद आरोपी ने भरोसा दिलाया कि अब वह उसे परेशान नहीं करेगा। करीब ढाई महीने बाद 2 जून को आरोपी ने फिर छात्रा से संपर्क किया और 10 हजार रुपए की मांग की। उसने दोबारा धमकी दी कि यदि रुपए नहीं दिए गए तो वह अश्लील तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर देगा। इस बार छात्रा ने हिम्मत जुटाकर पूरी घटना अपनी मां को बता दी। इसके बाद परिजन पंढरीनाथ थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई।

सुनार से होगी पूछताछ

प्रकरण दर्ज होने के बाद पुलिस ने आरोपी नैतिक को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उसने स्वीकार किया कि छात्रा से लिए गए सोने के आभूषण उसने एक सुनार को बेच दिए थे। पुलिस अब उस सुनार से भी पूछताछ कर रही है, ताकि आभूषण बरामद किए जा सकें और पूरे मामले की कड़ियां जोड़ी जा सकें। पुलिस के अनुसार, आरोपी के खिलाफ ब्लैकमेलिंग, धोखाधड़ी, पॉक्सो अधिनियम और अन्य संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच जारी है और पुलिस पूरे घटनाक्रम से जुड़े अन्य पहलुओं की भी पड़ताल कर रही है।

'एक पेड़ मां के नाम' का संदेश गूंजा

इंदौर। शहर में पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बनाने के उद्देश्य से शनिवार सुबह राजवाड़ा पर 'एक पेड़ मां के नाम' महाअभियान का शुभारंभ हुआ। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के मार्गदर्शन तथा महापौर पुष्यमित्र भार्गव के नेतृत्व में इंदौर में 21 लाख पौधारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अभियान के तहत शनिवार सुबह 6 बजे से लगातार 21 घंटे तक राजवाड़ा परिसर में 'एक पेड़ लगाऊंगा अपनी मां के नाम' गीत की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर मनीष शर्मा 'मामा' और राजू शर्मा ने गीत के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण और मातृ सम्मान का संदेश दिया। कार्यक्रम में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में शहरवासियों ने भाग लेकर अपनी मां के नाम एक पौधा लगाने का संकल्प लिया। आयोजन स्थल पर आने वाले लोगों के लिए निःशुल्क पोहा और चाय की व्यवस्था भी की गई, जिसका सभी ने उत्साहपूर्वक आनंद लिया। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ बड़ी संख्या में शहर के नागरिक मौजूद रहे। सभी ने अधिक से अधिक पौधे लगाकर उन्हें संरक्षित रखने का संकल्प लिया। आयोजकों ने नागरिकों से अपील की कि वे इस हरित अभियान से जुड़कर पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और अपनी मां के नाम कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं।

आज पीएससी की सहायक प्राध्यापक परीक्षा

इंदौर। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) द्वारा सहायक प्राध्यापक परीक्षा-2025 का आयोजन रविवार 12 जुलाई को किया जाएगा। परीक्षा इंदौर शहर के 13 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित होगी, जिसमें 5,710 अभ्यर्थी सम्मिलित होंगे। परीक्षा दो सत्रों में आयोजित होगी। प्रथम सत्र प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक तथा द्वितीय सत्र दोपहर 1 बजे से शाम 4 बजे तक रहेगा। अभ्यर्थियों को परीक्षा प्रारंभ होने के 15 मिनट पूर्व तक ही परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया जाएगा। निर्धारित समय के बाद किसी भी अभ्यर्थी को प्रवेश नहीं मिलेगा। परीक्षा 6 विषयों संस्कृत, भूगोल, मनोविज्ञान, विधि, भूगर्भशास्त्र और योगिक विज्ञान के लिए आयोजित की जा रही है।

वाहन चोर गैंग का साथी गिरफ्तार, बाइक को टक्कर मारकर पकड़ा

चोरी की 2 बाइक जब्त, किराए के युवकों से कराते चोरी

इंदौर। हीरा नगर थाना पुलिस ने वाहन चोरी करने वाले गिरोह के एक सदस्य को पीछा कर गिरफ्तार किया है। आरोपी अपने साथियों के साथ शहर में आकर दोपहिया वाहन चोरी की वारदातों को अंजाम देता था। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी की 2 बाइक बरामद की हैं। पूछताछ में आरोपी ने कई अहम जानकारियां दी है, जबकि उसके 2 साथी मौके से फरार हो गए। उनकी तलाश जारी है। थाना प्रभारी सुशील पटेल के अनुसार, रात में पुलिस इलाके में गश्त और सर्चिंग कर रही थी। इसी दौरान धार निवासी दिलीप पिता मदन भूरिया अपने साथियों के साथ बाइक चोरी की नीयत से क्षेत्र में पहुंचा था। पुलिस को संदेह होने पर उनका पीछा किया गया। पुलिस की कार्रवाई से बचने के लिए आरोपी अलग-अलग बाइक पर सवार होकर भागने लगे। पीछा करते हुए पुलिस ने एक आरोपी की बाइक को टक्कर मारकर उसे गिरा दिया और मौके पर ही पकड़ लिया। इसके बाद उसे थाने लाकर पूछताछ की गई।

चोरी की बाइक बरामद

पूछताछ के दौरान आरोपी के कब्जे से चोरी की 2 बाइक बरामद हुईं। उसने स्वीकार किया कि दोनों वाहन इंदौर और देपालपुर क्षेत्र से चोरी किए गए थे। पुलिस बरामद वाहनों के संबंध में भी जांच कर रही है।पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर वाहन चोरी की कई वारदातों को अंजाम दे चुका है। उसने यह भी बताया कि गिरोह गांव से युवकों को 1500 से 2000 रुपए देकर इंदौर लाता था और उनसे चोरी की घटनाएं करवाई जाती थीं। पुलिस अब आरोपी के फरार साथियों की तलाश में जुटी है। अधिकारियों का कहना है कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ के आधार पर वाहन चोरी की कई अन्य घटनाओं का भी खुलासा हो सकता है। पुलिस पूरे गिरोह की गतिविधियों और चोरी के अन्य मामलों की भी जांच कर रही है।

कनाडिया से राऊ तक बायपास की सर्विस रोड उखड़ी, रोज होते हैं हादसे

बिचौली मर्दाना से देवगुराड़िया तक के हालात सबसे ज्यादा खराब

इंदौर। शहर के बायपास के शहरी हिस्से में पहली ही बारिश ने सड़क निर्माण और मरम्मत की गुणवत्ता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। कनाड़िया से राऊ तक कई स्थानों पर सर्विस रोड उखड़ चुकी है। जगह-जगह गहरे गड्ढे, जलभराव और अधूरे निर्माण कार्यों के कारण वाहन चालकों को रोजाना परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि लंबे समय से स्थायी मरम्मत नहीं होने के कारण सड़क की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है और आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। बायपास पर सबसे खराब स्थिति बिचौली मर्दाना से देवगुराड़िया के बीच देखने को मिल रही है। इस हिस्से में सड़क पर 1 से 1.5 फीट तक गहरे गड्ढे बन गए हैं। बारिश का पानी और कीचड़ इन गड्ढों में भर जाने से वाहन चालकों के लिए खतरा और बढ़ गया है। पानी निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं होने से सड़क लगातार

क्षतिग्रस्त होती जा रही है। स्थानीय दुकानदारों का कहना है कि पिछले एक वर्ष से अधिक समय से सड़क की स्थायी मरम्मत नहीं कराई गई। दोपहिया वाहन चालक रोज फिसलकर घायल हो रहे हैं और छोटे-बड़े हादसे लगातार सामने आ रहे हैं।

भारी वाहनों ने बिगाड़ी सड़क

देवगुराड़िया से पत्थर मुंडला के बीच लगभग 500 मीटर लंबे हिस्से में प्रतिदिन बड़ी संख्या में ट्रकों की आवाजाही होती है। कई ट्रक सड़क किनारे खड़े भी रहते हैं। लगातार बढ़ते भार के कारण इस हिस्से की सड़क पूरी तरह उखड़ चुकी है, जिससे यातायात प्रभावित हो रहा है। क्षेत्र के लोगों का कहना है कि सड़क की स्थायी मरम्मत के बजाय केवल पेवर ब्लॉक लगाकर पैचवर्क किया गया था। पहली ही बारिश में यह पैचवर्क भी उखड़ गया। कई स्थानों पर खुली नालियां और जलभराव के कारण दुर्घटना की आशंका लगातार बनी हुई है।

एमआर-10 ब्रिज का काम रुका – एमआर-10 ब्रिज को लेकर जून के अंत तक एक तरफ से यातायात शुरू करने का दावा किया गया था, लेकिन राऊ की ओर एप्रोच रोड और रिटेनिंग वॉल का निर्माण अभी भी पूरा नहीं हो सका है। निर्माण एजेंसियों के अनुसार इस कार्य को पूरा होने में कम से कम एक माह और लग सकता है। इसके कारण आसपास की सड़कों पर वाहनों का दबाव लगातार बढ़ रहा है।

कई क्षेत्रों में सड़कें खराब – समस्या केवल बिचौली मर्दाना और देवगुराड़िया तक सीमित नहीं है। तेजाजी नगर, कनाडिया, ओमेक्स सिटी, मायाखेड़ी और झलारिया के आसपास भी सर्विस रोड तथा मुख्य मार्ग कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त हैं। बायपास के दोनों ओर बनी नालियां खुली पड़ी है, जिसमें कचरा जमा होने से पानी की निकासी प्रभावित हो रही है। कई फ्लाईओवर पर पहले किया गया पैचवर्क भी बारिश में उखड़ चुका है, लेकिन अब तक दोबारा मरम्मत नहीं की गई।

कला

संदीप राशिनकर

कला में सौंदर्य के साथ जरूरी है विचार भी

कोई भी कला,चाहे वह चित्रकला हो , संगीत हो या नाट्य हो वह मानवीय भावाभिव्यक्ति का एक सहज व सशक्त माध्यम है! और जहां तक अभिव्यक्ति का प्रश्न है तो निश्चित है इसमें सम्प्रेषित होता एक सार्थक विचार भी अपेक्षित है। जहां तक अभिव्यक्ति के इस सशक्त माध्यम का प्रश्न है तो निश्चित ही यह कला सिर्फ और सिर्फ सौंदर्य, रंग संगति और आकर्षक संयोजन तक सीमित नहीं हो सकती! निश्चित ही यह रंग-बिरंगे पोतों के केनवास पर लेपन या कोई चमत्कारिक रंग संगति, दर्शकों की दृष्टि को चौंका ते संयोजन तक सीमित नहीं हो सकती।जब तक इस कौशल के साथ कलाकृति में अभिव्यक्त होता कोई सार्थक विचार, चिंतन या सरोकार मौजूद नहीं है तब तक ये कला के अपेक्षित मानक को पूरा नहीं करती है।

कला या कलाकृति का विचार आते ही मन में साकार होने लगती है एक कल्पना जो सौंदर्य से भरी-पूरी होने के साथ ही अपने रंगों, बिम्बों,आकारों और संयोजन से आंखों को सुकून देती हो, उसमें से अभिव्यक्त होता सौंदर्य बोध दर्शक के मन को आल्हादित करता हो। क्या यही मानक है कला या कलाकृति की पूर्णता का?

कोई भी कला,चाहे वह चित्रकला हो, संगीत हो या नाट्य हो वह मानवीय भावाभिव्यक्ति का एक सहज व सशक्त माध्यम है! और जहां तक अभिव्यक्ति का प्रश्न है तो निश्चित है इसमें सम्प्रेषित होता एक सार्थक विचार भी अपेक्षित है। जहां तक अभिव्यक्ति के इस सशक्त माध्यम का प्रश्न है तो निश्चित ही यह कला सिर्फ और सिर्फ सौंदर्य, रंग संगति और आकर्षक संयोजन तक सीमित नहीं हो सकती! निश्चित ही यह रंग बिरंगे पोतों के केनवास पर लेपन या कोई चमत्कारिक रंग संगति, दर्शकों की दृष्टि को चौंका ते संयोजन तक सीमित नहीं हो सकती ।जब तक इस कौशल के साथ कलाकृति में अभिव्यक्त होता कोई सार्थक विचार, चिंतन या सरोकार मौजूद नहीं है तब तक ये कला के अपेक्षित मानक को पूरा नहीं करती है।

कोई सार्थक विचार ,चिंतन व विषय की कलाकृति में सशक्त उपस्थिति उस कलाकृति की महत्ता को स्थापित करते वह महत्वपूर्ण घटक है जो उसे कला के मापदंड पर पूर्णता प्रदान करते हैं। कलाएं सिर्फ देखने वाले की तृप्ति या उसे देखकर उसे मिलनेवाले आल्हाद तक सीमित नही है, वरन उससे मस्तिष्क के स्तर पर दर्शकों को विचार - विषय के स्तर पर आंदोलित करने की भी दरकार है। कला सृजन के दौरान कलाकार जहां इस बात की दक्षता लेता है कि उसकी कलाकृति आकर्षक, दर्शनीय हो वहीं उसे उसकी कलाकृति की विषयवस्तु, विचार और अभिव्यक्तिय सामर्थ्य के पक्ष पर भी समुचित तवज्जो देने की आवश्यकता है। हर कलासृजन के पूर्व कलाकार को यह सोचना चाहिए कि सृजन पश्चात उसकी यह कृति उसकी नहीं उस समाज की धरोहर होना है जिसमें वह रहता है। निश्चित ही उस समाज के दर्शक वर्ग से रूबरू होने वाली उस कलाकृति में समाज के सरोकारों का पक्ष अभिव्यक्त होने से न सिर्फ कृति का सौंदर्य पक्ष दर्शकों को आकर्षित व आल्हादित करेगा, बल्कि उसमें निहित सुविचारित सरोकार का विचार पक्ष दर्शकों को सिर्फ दृष्टि के स्तर पर ही नहीं वरन मस्तिष्क के स्तर पर भी प्रभावित करते हुए उससे एक आत्मीय जुड़ाव का निर्माण करेगा।

जिस परिवेश के लिए कलाकृति का सृजन या चयन होता है, उस कलाकृति से निश्चित ही यह अपेक्षित है कि वह उस परिवेश के उपयोग के उद्देश्य, कार्यप्रणाली व कार्यक्षमता के लिए मात्र उत्प्रेरक ही नहीं, प्रेरणास्त्रोत का भी काम करे। यह तभी सम्भव है जब कलाकार कलासृजन के दौर में कृति के सौंदर्य पक्ष के साथ साथ उससे अभिव्यक्त होते विचार पक्ष पर भी गहन प्रामाणिकता, मौलिक चिंतन व मनन के साथ कार्य करें।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कला के बाज़ारीकरण के चलते अभिव्यक्ति का पुरातन माध्यम चित्रकला मात्र कमोडिटीज में तब्दील होने को अभिशप्त नज़र आ रहा है। भौतिकीकरण के तमाम दबावों और ग्लैमर के अंधे आकर्षण के इस दौर में भी कलाकारों से ये अपेक्षाएं बेमानी नही होंगी कि अभिव्यक्ति के इस सशक्त माध्यम चित्रकला के सृजन में निहित अभिव्यक्ति पक्ष की महत्ता को ध्यान में रखते हुए वे कला सृजन में कृति के आवश्यक सौंदर्य पक्ष के साथ ही उसके विचार पक्ष का भी सार्थकता से निर्वहन करें!

जय हो ....

लघुकथा

निर्णय

स्वाति 'सखी' जोशी

'सचिन, मैं कल से आधा घंटा देरी से घर आऊंगी।' श्यामली ने आते ही घोषणा की। 'क्यों? क्या तुम्हारे आफिस का टाईम बढ़ गया है?' सचिन ने तुरंत पूछा।

'नहीं सचिन, मैं अब रोज घर आने से पहले मम्मीजी से मिलने जाया करूंगी।' 'क्या? मेरी मम्मी बगल वाले फ्लैट में ही तो रहती है। जब चाहे वह हमें बेल बजाकर बुला सकती है। हमारा फ्लैट छोटा पड़ेगा और बच्चों की, हमारी और मम्मी - पापा की स्वतंत्रता के लिये ही तो हमने अगल - बगल के फ्लैट्स लिये थे ना। अब अचानक क्या हो गया? 'सचिन कुछ समझ नहीं पाया।' वह तब की बात थी, अब जब पापा नहीं रहे, तो मम्मीजी दिन भर अकेली रहती हैं। वे राह देखती हैं कि कभी तुम, मैं या बच्चे जा कर उनसे थोड़ा बतियाऐं।' श्यामाबाई से वे कह रही थीं कि 'पहाड़ सा दिन काटे नहीं कटता है।' 'लेकिन मैं तो मम्मी को सारा जरूरत का सामान और दवाई वगैरह ला कर देता हूँ।' सचिन ने अपने पक्ष में सफाई दी। 'इतना काफी नहीं है सचिन! और तो और,बच्चों के साथ भी मैं कुछ खास व्यंजन भेजती हूं तो वे तो तुरंत वहाँ से भाग आते हैं।' 'मम्मीजी टीवी देखकर और किताबें पढ़कर भी उकता जाती हैं। फिर किसी को फोन करें भी तो आजकल किसी के पास समय कहाँ है बतियाने का' 'फिर छः महीने में हमारे विशाल की भी तो शादी है। नई बहू के सामने उदाहरण भी तो रखना होगा। यही सब सोचकर मैंने निर्णय लिया है।' श्यामली ने एक ही सांस में मन की बात बोल दी। 'तुम्हारा निर्णय सर आंखों पर!' कहकर सचिन ने संतुष्टि की सांस ली।

कायर कौम की बानगी

मैनेजमेंट मंत्र

विजय जोशी

लेखक भेल के पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक हैं।

चाहे जो हो धर्म तुम्हारा चाहे जो वादी हो नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हो ईश्वर ने धरती पर पुरूष को पुरुषार्थ सहित इसलिये भेजा कि वह कर्म पथ पर आनेवाली बाधाओं का वीरतापूर्वक सामना करते हुए आगत पीढ़ी के लिए नए प्रतिमान स्थापित कर सके। इसीलिये कहा भी गया है- 'वीर भोग्या वसुंधरा'। यह तो हुई पहली बात।

दूसरी यह कि सनातन का तो सारा इतिहास ही अस्त्र शस्त्र धारियों की उपलब्धि की कहानी है। युग प्रवर्तक धनुर्धारी राम और सुदर्शन धारी कृष्ण इसके ज्वलंत उदाहरण हैं- 'परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कृतानामं संभवामि युगे युगे'। हां बात यह भी है कि उन्होंने शांति प्रयास समाप्ति के बाद ही वीरता पूर्ण तरीका अपनाया-

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति

एक प्रसंगः सर्वाधिक आपदा प्रभावित एवं प्रतिकूल मौसम के बावजूद जापानियों की कर्मठता, देशभक्ति तथा ईमानदारी सर्वविदित है। अतिथि सत्कार अद्भुत। पर वे बाहरी लोगों को घर पर आमंत्रित नहीं करते, खासतौर पर यदि वह भारतीय हो। एक भारतीय ने जब कारण जानना चाहा तो जो उत्तर मिला वह हमारी आंखें खोलने के लिये पर्याप्त है।

जापानी ने कहाः विश्व इतिहास में गुलामी एवं कायरता के प्रतीक हैं आप लोग। चंद विदेशी घुड़सवारों ने दिल्ली को 17 बार लूटा, किंतु कोई प्रतिकार नहीं। तैमूरलंग तो लंगड़ा तक था। फिर उन्हीं के सदियों गुलाम भी रहे। क्यों ?

ईस्ट इंडिया कंपनी तो व्यापारी मात्र थी, राजनैतिक दल नहीं। उन तक की गुलामी को आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

जापानी ने अपनी बात का क्रम जारी रखाः और तो और एक अंग्रेज के आदेश पर आप के सिपाहियों ने जलियांवाला बाग में अपने ही 1000 से अधिक देशवासियों को गोलियों से भून दिया और 1500 से अधिक महिलाओं, बच्चों को गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। क्या कायर हिंदुस्तानी फौज के एक भी सिपाही में इतना साहस नहीं था कि एकमात्र अकेले अंग्रेज जनरल डायर को गोली मारकर हजारों देशवासियों के प्राणों की रक्षा कर लेता। क्या कहेंगे इसे आप। कायरता, खुदगर्जी, देश से विश्वासघात नहीं तो और क्या। आपका इतिहास सदियों की गुलामी का इतिहास है।

हिंदुस्तानी के समक्ष स्तब्ध और शर्मसार होने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था। जापानी जो कहा वह सार्वभौम सत्य था। कई शताब्दियों की गुलामी से आप्लावित स्वयंसिद्ध इतिहास से हमारा साक्षात्कार।

निष्कर्षः मित्रों हमारा देश दो चुनातियों से अनंतकाल से जूझ रहा हैः देशभक्ति और ईमानदारी। शत्रु बाहर कम अंदर अधिक हैं। मीर ज़ाफर, जयचंद हर दौर में रहे हैं। गुलामी हमारी मानसिकता में है। हमारी प्रजातांत्रिक राजनीति तक पारिवारिक गुलामी की दास्तान है। सोचिये हम कैसी मानसिकता की निधि नई पीढ़ी की सौंप कर विदा होंगे। एक दौर का विशाल आर्यावर्त कितने टुकड़ों में बंटकर सिमट गया है। शायद और सिमट जाएगा यदि अब भी नहीं चेते।

अपने ही हाथों में पतवार सँभाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए
कुछ लुटेरों ने भी पहना है फरिश्तों का लिबास
इनके बारे में ग़लतफ़हमी न पाली जाए।

फिर आया

लघुकथा

मेघा राठी

फिर बारिश का अनुसान आ गया और याद गए वो पल...जब अपने-अपने घर से हम एक दूजे को बारिश की तस्वीरें-वीडियो भेजा आकर्ते थे। ऐसे जैसे एक दूजे के साथ इसी तरह बारिश में साथ भीग लेंगे।

'देखो, अभी तो पानी तेज गिर था था, अब धीमा हो गया!'

'होने दो, पानी गिर रहा है और तुम साथ है इससे सुंदर कुछ नहीं।'

हथेली पर बारिश की बूंदों की तस्वीर ले एक दूसरे पर जाने कितनी बार उछाल देते थे। बस अहसास ही तो था कि दूर होकर भी साथ है हम।

वीडियो कॉल पर सड़को पर भरे पानी की को दिखाते तो कभी छत से टपकते पानी की लड़ियों को निहारते, हमने सालों बिता दिए थे इस इंतजार में कि कभी किसी रोज हम हकीकत में साथ-साथ बारिश में भीगेंगे।

इस ख्वाहिश में खाई मै जान ही नहीं पाई कि यह सपना न जाने कब सिर्फ हम दोनों का नहीं रहा.. बंट गया था किसी और के संग, और... और बांटने वाला भी कोई और नहीं, 'तुम थे।'

'बारिश पर सिर्फ तुम्हारा अधिकार नहीं, वह दूसरों के लिए भी है।क्या हुआ जो थोड़ी सी बारिश उनके साथ भी देख ली तो!'

हाँ क्या हुआ भला, मगर सपने तो केवल दो लोगों के होते हैं,इनमें कोई तीसरा आ जाय न

...तो वे टूट ही जाते हैं। तुमने मुझे इजाजत भी न ली, मुझे खबर तक नहीं होने दी। मेरा सालों का इंतजार...?

हुआ न पूरा! पूरा हुआ वह भी। बारिश में हम दोनों अब एक साथ भीगते हैं। बस अब वह बारिश मेरी आंखों में बरसती है और मेरी आंखों में बसी तुम्हारी तस्वीर के साथ मै रोज भीगती हूं।

अच्छा है न...अब बारिश के लिए मुझे किसी मौसम का इंतजार नहीं करता पड़ता।

अर्थपूर्ण कविताओं का एक परिपूर्ण संकलन

राजा दुबे

पुस्तक के शीर्षक से ही परिलक्षित है कि संकलन की अधिकांश कविताएं समय पर केन्द्रित हैं और जैसा की सुधीर सक्सेना ने इस संग्रह की भूमिका में लिखा है 'अधिसंख्य कविताएं समय की महत्ता को रेखांकित करती है। सुरेश शास्त्रोक्त छन्द में बँधकर कविताएं नहीं लिखते हैं और न ही तुक मिलाने के लिये चेष्टारत लगते हैं फिर भी उनकी इन कविताओं में एक आत्म प्रादुर्भूत लय है और कहीं कुछ टूटने अथवा छूटने की प्रतीति नहीं होती है। शब्द और विषय के संयोजन के मानदण्ड पर उनकी कविताओं में एक परिपूर्णता है।

सुरेश गुप्ता की गद्य (विशेष रूप से संस्मरण) और पद्य,दोनों ही विधा पर अच्छी पकड़ है। उनकी पहली पुस्तक कविता- संग्रह थी - 'असमय का अँधेरा', जिसने उनके परिपक्व लेखक होने की पुष्टि की थी। दूसरी पुस्तक दिवंगत मित्र मनोज पाठक से जुड़े संस्मरण के संकलन के रुप में सामने आई थी - 'मित्र- स्मृति'। अब उनकी तीसरी पुस्तक आई है -'समय के दाँत', यह एक कविता संग्रह है जिसमें उनकी इकहत्तर कविताएं संकलित हैं।

उनका यह रचना उपक्रम पिछले उपक्रम से एक दो नहीं पूरे दस कदम आगे है। पुस्तक के शीर्षक से ही परिलक्षित है कि संकलन की अधिकांश कविताएं समय पर केन्द्रित हैं और जैसा की सुधीर सक्सेना ने इस संग्रह की भूमिका में लिखा है 'अधिसंख्य कविताएं समय की महत्ता को रेखांकित करती है। सुरेश शास्त्रोक्त छन्द में बँधकर कविताएं नहीं लिखते हैं और न ही तुक मिलाने के लिये चेष्टारत लगते हैं फिर भी उनकी इन कविताओं में एक आत्म प्रादुर्भूत लय है और कहीं कुछ टूटने अथवा छूटने की प्रतीति नहीं होती है। शब्द और विषय के संयोजन के मानदण्ड पर उनकी कविताओं में एक परिपूर्णता है।

संग्रह की शीर्षक रचना - 'समय के दाँत' को पढ़ने के बाद लगता है कि अर्थवत्ता के नज़रिये से उनकी यह कविता समय को दाँत के विशेषण दिये जाने की मीमांसा में सर्वथा सार्थक रचना है। इस कविता में सुरेश ने समय के दाँत की तुलना हाथी के दाँत से की है। सुरेश लिखते हैं समय के दाँत हाथी के खाने के दाँतों की तरह दिखते नहीं है मगर हाथी के दांतों से ज़्यादा नुकीले होते हैं। वे यह भी लिखते हैं कि हाथी के दाँतों के घाव ठीक हो सकते हैं मगर समय के दाँत के घाव नहीं । कविता के समापन की दो बातें उनकी गहरी समझ को दर्शाती है - एक, समय के दाँत खरीदे- बेचे नहीं जा सकते और दो, समय के दाँत दिखाने के नहीं सिखाने के होते हैं ।

और अब समीक्षा का यह पैरा लिखने के पहले

एक 'अस्वीकरण'। इस पैरे को लिखने के पहले मैंने प्रबुद्ध लेखक सुधीर सक्सेना की भूमिका के पहले वाक्य को छोड़कर शेष भूमिका जानबूझकर नहीं पढ़ी ताकि मैं सुरेश की अन्य कविताओं के बारे में लिखते समय सुधीरजी के चयनित उल्लेख अँश से प्रभावित न होऊँ। सुरेश की पहली कविता में ही उन्होंने लिखा है - 'कोई नहीं होता/तब भी वो होता है/मेरे साथ/ मेरे पास/सुगन्ध की तरह/ सुगन्ध जो कम नहीं होती है'। उनकी इस कविता कि उपमा-उपमेय से मुझे वरिष्ठ कवि चन्द्रशेखर साकल्ये की कविता -'उन्हें सुगन्ध से पहचानों' बरबस याद आ गई।

संग्रह की अन्य कविताएं, जो मुझे उल्लेखनीय लगीं उनमें से कुछ का ज़िक्र समीचीन होगा। वे अपनी कविता -'मन' के माध्यम से यह सवाल करते हैं कि -'सबका मन लग रहा/मेरा मन क्यों नहीं लग रहा', कितनी सार्थक है यह अनुभूति?

इसी तरह -'समय तय करेगा' भी विलक्षण कविता है, जहाँ सुरेश ने कहा है - 'मैंने तय कर लिया है / कुछ भी तय नहीं करने का .../ ..तय करने का समय होता है / जिसे मैंने गँवा दिया है/

अब मैं नहीं/समय तय करेगा,इस कविता की

संग्रह की लगभग सभी कविताएं उल्लेखनीय है और एक भी कविता अर्थ और सन्दर्भ से कटी हुई नहीं लगी। कविता ज़िन्दा रखेगी शब्द , हमारे समय का पागलपन, पूरा घर थी माँ , पिता का ज़माना और बहन के लिये भी अच्छी कविताएं हैं।

'समय के दाँत' एक अच्छा कविता संग्रह है और यदि वर्ष 2026 की उल्लेखनीय पुस्तकों में यदि इस पुस्तक का ज़िक्र नहीं हुआ तो मुझे आश्चर्य होगा । कविता लिखने में सुरेश ने अपनी पहले संकलन से दूसरे संकलन तक एक लम्बी उछाल ली हैं।

समय के दाँत (कविता संग्रह) लेखक - सुरेश गुप्ता, प्रकाशक - वागीश्वरी प्रकाशन, भोपाल, मुद्रक - अनुराग अपसेट , भोपाल,पृष्ठ - 80, मूल्य - 250 मात्र

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

नटराज, चक्र तथा मंदिर की महिमा गाथा

भारत जिसके कला एवं संस्कृतियों पर आघात पहुँचा कर उस पर पाश्चात्य संस्कृति थोपने का प्रयास हुआ, जहाँ के संस्कारों को विपन्न बताया गया वही भारत आज अपने उन्हीं थातियों, कला, संस्कार एवं संस्कृतियों को विश्व के सामने प्रदर्शित कर अपने आज एवं प्राचीन से प्राचीनतम संपन्नता को दर्शाने में पूर्णत: सक्षम है और लोगों का ध्यान भी खींच रहा है। कुछ समय पूर्व भारत मंडपम में संपन्न हुए जी 20, जिसका थीम वसुधैव कुटुंबकम् था को पूरे विश्व ने देखा। वसुधैव कुटुंबकम् का मंत्र देने वाला देश भी भारत ही है। जी-20 के कार्यक्रम के फ्रेम में बार-बार आ रहे नटराज की मूर्ति, नालंदा, साबरमती आश्रम के प्रतिकृति के माध्यम से विश्व ने भारत को जाना, पहचाना, और गहराई से समझा। वहाँ प्रदर्शित नटराज की मूर्ति अष्टधातु से निर्मित और 27 फिट ऊँची है। नटराज भगवान शिव के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक है। यह मूर्ति तांडव मुद्रा को दर्शाती है। रौद्र तांडव करने वाले शिव रूद्र के रूप में पहचाने जाते हैं जबकि आनंद तांडव करने वाले शिव को नटराज कहा जाता है।

हमारा देश भारत, संस्कार एवं संस्कृतियों का देश भारत, प्राचीन से प्राचीनतम धरोहरों का देश भारत, अजंता, एलोरा जैसे थातियों का देश भारत। खजुराहो, कोणार्क, सारनाथ, सांची, नालंदा, काशी जैसे धरोहरों से संपन्न भारत। ऋषि, मुनियों, जड़ी-बूटियों का देश भारत। भारत जिसने कोविड काल में गिलोय, हल्दी सहित काढ़े के महत्व से सभी को चौका दिया। हाँ हम उसी संस्कृतियों के देश भारत की बात कर रहे हैं जिसे बार-बार आघात पहुँचाया गया, जिसके जड़ को नष्ट करने के तमाम प्रयास किए गए। भारत फिर भी अपने उन्हीं संस्कृतियों के साथ खड़ा रहा, कुछ अच्छा होनें के उम्मीद में खड़ा रहा, कोई तो होगा जो कदर करेगा इस उम्मीद में खड़ा रहा।

भारत जिसके कला एवं संस्कृतियों पर आघात पहुँचा कर उस पर पाश्चात्य संस्कृति थोपने का प्रयास हुआ, जहाँ के संस्कारों को विपन्न बताया गया वही भारत आज अपने उन्हीं थातियों, कला, संस्कार एवं संस्कृतियों को विश्व के सामने प्रदर्शित कर अपने आज एवं प्राचीन से प्राचीनतम संपन्नता को दर्शाने में पूर्णतः सक्षम है और लोगों का ध्यान भी खींच रहा है। कुछ समय पूर्व भारत मंडपम में संपन्न हुए जी 20, जिसका थीम वसुधैव कुटुंबकम् था को पूरे विश्व ने देखा। वसुधैव कुटुंबकम् का मंत्र देने वाला देश भी भारत ही है। जी-20 के कार्यक्रम के फ्रेम में बार-बार आ रहे नटराज की मूर्ति, नालंदा, साबरमती आश्रम के प्रतिकृति के माध्यम से विश्व ने भारत को जाना, पहचाना, और गहराई से समझा। वहाँ प्रदर्शित नटराज की मूर्ति अष्टधातु से निर्मित और 27 फिट ऊँची है। नटराज भगवान शिव के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक है। यह मूर्ति तांडव मुद्रा को दर्शाती है। रौद्र तांडव करने वाले शिव रूद्र के रूप में पहचाने जाते हैं जबकि आनंद तांडव करने वाले शिव को नटराज कहा जाता है। नटराज की मूर्ति मनमोहक के साथ ही तमाम रहस्यों को खुद में समाहित किए हुए है। मूर्ति की चार भुजाएँ हैं। ऊपर उठे एक हाथ में डमरू है। डमरू सृजन को दर्शाता है जबकि दूसरे उठे हुए हाथ में अग्नि है जो विनाश को दर्शाता है। सृजन और संहार दोनों के परिचायक हैं नटराज। एक हाथ अभय मुद्रा अर्थात् आशीष की मुद्रा में है, साथ ही नृत्य मुद्रा को भी दर्शाता है जबकि नीचे की ओर झुका बाँया हाथ नृत्य के अधूरे मुद्रा को पूरा करता है साथ ही पैर की ओर इशारा करते हुए सभी के मोक्ष को भी दर्शाता है। नटराज मूर्ति सम्पूर्ण सृष्टि को परिभाषित करने में सक्षम है।

नटराज मूर्ति सर्वोत्तम है। मूर्ति के चारों ओर वृत्त का घेरा है और घेरे पर क्रमबद्ध अग्नि जो ब्रह्माण्ड की बात को उजागर करता है। सर्पाकार लहरें कुंडलिनी को दिखाती हैं तो पाँव के नीचे दबा दानव अज्ञानता, अंधकार को दर्शाता है। फ्रेम में नालंदा जिसका अपना एक विशेष स्थान रहा है। शिक्षा का विशेष स्थान रहा है नालंदा, जहाँ से वैश्विक स्तर पर सम्पन्नता फैली है। इसी कड़ी में बात करते हैं चक्र की उसी चक्र की जिसकी प्रतिकृति के सामने जी 20 समिट में भाग लेने आए तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्षों से भारत के प्रधानमंत्री ने हाथ मिला कर सभी का स्वागत किया था और लोगों को कोणार्क के चक्र से परिचित करवाया था, कोणार्क के बारे में समझाया था। तस्वीरें खिंचवाई थीं। चक्र जिसकी महिमा जानते तो लगभग सभी भारतीय हैं पर अब और जानने की अधीरता बढ़ गई है। भारत कलाओं का देश है, लोक कलाओं का देश है। भारतीय कृतियाँ वर्णनात्मक शैली पर अधिक हैं। भारतीय कृतियों के साथ कथानक होता है, इतिहास होता है, उसके होने की वजह होती है। कोणार्क के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कोणार्क

जिसके सिर्फ पहिए पर ही इतने गुण हैं कि गिनते अंगुली थक जाए तो पूरे मंदिर में क्या होगा सोचा जा सकता है। मंदिर 12 जोड़े पहिए वाले विशाल रथ के रूप में बना है जिसे सात विशाल घोड़े खींच रहे हैं, फिलहाल घोड़े खंडित अवस्था में हैं। दीवार पर उभरी हुई तमाम आकृतियाँ क्रमवार उकेरी गई हैं। आकृतियाँ एनॉटामी, लय, छंद से संपन्न हैं। मंदिर के हर स्पेश को आकृतियों से संतुलित करने का प्रयास किया गया है। पूरे मंदिर को इस तरीके से डिजाइन किया गया है कि लगता है घोड़े रथ को खींच रहे हैं और मंदिर रथ पर ही आसीन है। भ्रम की स्थिति है। भारतीय कला की जितनी भी विशेषताएं हैं, यहाँ पर सभी प्रदर्शित है। पशु, पक्षी, देव, मानव सभी का समन्वित रूप यहाँ पर दिखाई देता है। तेरहवीं शताब्दी के मध्य राजा नरसिंह देव द्वारा निर्मित ओडिशा के कोणार्क में स्थित सूर्य मंदिर तमाम विशेषताओं से भरापुरा है। इसे काला पैगोडा के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय कला हमेशा से ही भावों, रेखाओं और उसके महत्व पर ध्यान देने वाली रही है। सभी कलाओं की अपनी विशेषता, उपयोगिता रही है। कोणार्क के सूर्य मंदिर की भी रही है जिसके शिखर को बहुत पहले उसके महत्व को कम करने हेतु हानि पहुँचाया गया पर उसका महत्व कोई क्या कम कर पायेगा? मंदिर प्रांगण में ही मानव के ऊपर हाथी उसके ऊपर शेर को दिखाया गया है जो मनुष्य के धनवान और समृद्ध होने के घमंड से मुक्त हो कर ही दर्शन की बात बताता है। बताता है कि किसी भी मंदिर में दर्शन के पूर्व तमाम विसंगतियों से खुद को मुक्त कर के ही अंदर जाना चाहिए।

मंदिर में सात घोड़े हफ्ते के सात दिनों को दर्शाते हैं जबकि 12 पहिए महीनों को दिखाते हैं वहीं 12 जोड़े यानि 24 पहिए दिन के 24 घण्टों को दर्शाते हैं। रात दिन का भी इशारा पहिए में ही है। पहिए के केंद्र में हाथ लगाने पर बने हुए परछाई से हो रहे समय का पता लगाया जा सकता है। पहियों पर जबरदस्त नक्काशी का कार्य किया हुआ है। पहिए के अंदर आठ मोटी तथा आठ पतली तीलियाँ है। आठ मोटी तीलियाँ आठों पहर को दर्शाती हैं।

तीलियों पर 30 दाने 3-3 मिनट को दिखाते हैं। शंकर पार्वती, कृष्ण, राजा, नृत्य करती आकृतियाँ, कमल, घोड़े यानी पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ सब की छोटी-छोटी आकृतियानं भी यहाँ की सुंदरता को बढ़ाती हैं।

कोणार्क या फिर भारत के किसी भी धरोहर को ध्यान से देखने पर भारत की संपन्नता, भारत के कलाकारों की संपन्नता, कृतियों के माध्यम से वैज्ञानिक प्रमाणिकता आदि आदि को देखा जा सकता है। भारत हर मामले में विशेष है। भारत के विशेषता को विश्व ने देखा अब जरूरत है कि भारत के लोग भी अपने धरोहरों, मान्यताओं पर विश्वास करें, उसे सहेजें और गर्व से आने वाली पीढ़ी को उसके बारे में समझाएं, सहेजने को कहें और कहें कि अपने पुरखों को, उनके किस्सों को शान से गाओ, खुद पर गर्व करना सीखो। विरासतों को नजदीक से निहारों, स्पर्श करते हुए उसके अपनेपन को महसूसो। हमारे पूर्वज कलाकारों के सृजन और परिश्रम को समझो उनके महत्व को जानों और अपने भीतर के भारतीयता से परिचित हो।

साहित्य की परंपरा का पाथेय 'वनमाली कथा'

संपादक 'वनमाली कथा'

कुणाल सिंह

पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं थी; वह समाज के बौद्धिक जीवन का विस्तार थी।

किन्तु समय के साथ, विशेषकर मीडिया के व्यावसायिक विस्तार और तीव्र प्रतिस्पर्धा के दौर में, पत्रकारिता के भीतर विषयों का संतुलन बदलता गया। राजनीति समाचारों का केन्द्र बनी–जो अपने आप में अस्वाभाविक नहीं था–किन्तु धीरे-धीरे राजनीति का एक विशिष्ट रूप सम्पूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र पर छा गया। परिणामस्वरूप साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, लोकज्ञान, शिक्षा, विचार और समाज के गहरे प्रश्न मीडिया की प्राथमिकताओं से क्रमशः बाहर होते चले गये।

ऐसे समय में यह प्रश्न केवल आलोचना का नहीं, विकल्प के निर्माण का भी है। यदि पत्रकारिता का दायरा संकुचित हुआ है, तो उसके पुनर्विस्तार के लिए संस्थागत और वैचारिक पहल भी आवश्यक है। इसी विश्वास के साथ हमारे संस्थान ने पिछले वर्षों में विविध ज्ञानक्षेत्रों को केन्द्र में रखते हुए अनेक पत्रिकाओं के प्रकाशन का सतत प्रयास किया है। इन प्रकाशनों के बीच 'वनमाली कथा' का उल्लेख विशेष रूप से अपेक्षित है, क्योंकि यह केवल एक साहित्यिक पत्रिका नहीं, बल्कि साहित्यिक पत्रकारिता की उस परम्परा में एक सक्रिय हस्तक्षेप का प्रयास है जिसने हिन्दी समाज के बौद्धिक जीवन को लम्बे समय तक दिशा दी है। हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में साहित्य और पत्रकारिता का सम्बन्ध कभी परिधीय नहीं रहा; दोनों ने एक-दूसरे को समृद्ध किया है। अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, वैचारिक बहसें और सांस्कृतिक हस्तक्षेप पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही समाज तक पहुँचे।

'वनमाली कथा' का उद्देश्य केवल स्थापित रचनाकारों की उपस्थिति सुनिश्चित करना नहीं, बल्कि साहित्यिक संवाद की ऐसी संस्कृति को विकसित करना भी है जिसमें नई रचनात्मक आवाज़ों, वैचारिक विविधता और बदलते सामाजिक अनुभवों के लिए समान रूप से स्थान उपलब्ध हो। कथा, आलोचना, विमर्श, संस्मरण, अनुवाद, विचार और समकालीन साहित्यिक प्रश्नों पर केन्द्रित सामग्री के माध्यम से पत्रिका यह प्रयास करती रही है कि साहित्य को अपने समय के व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में पढ़ा और समझा जा सके।

यह रेखांकन योग्य है कि 'वनमाली कथा' में एक तरफ़ ममता कालिया, प्रियंवद, धनंजय वर्मा, अशोक वाजपेयी, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल जैसे वरिष्ठ रचनाकारों का सान्निध्य सम्भव हुआ है तो वहीं दर्ज़न-भर से अधिक ऐसे युवा रचनाकारों की रचनाएँ भी पहली बार इसी पत्रिका के माध्यम से प्रकाश में आई हैं। अब तक इसके कई विशेषांक चर्चित रहे हैं जिनमें भारतीय साहित्य विशेषांक, युवा पीढ़ी विशेषांक, नवलेखन विशेषांक, कथाविश्व के 25 मास्टर माइंड, स्त्री रचनाशीलता पर केन्द्रित अंक आदि अत्यन्त चर्चित रहे हैं। 'वनमाली कथा' का प्रयास केवल एक पत्रिका का प्रकाशन नहीं है; यह हिन्दी के साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र को जीवित और सक्रिय बनाये रखने का एक सतत प्रयास है। हमारे लिए यह विश्वास का विषय है कि साहित्यिक पत्रकारिता आज भी समाज की बौद्धिक संरचना में अपरिहार्य भूमिका निभाती है। पत्रकारिता की दो सौ वर्षों की यात्रा को भविष्य की ओर ले जाने में उसका योगदान और अधिक महत्वपूर्ण होने वाला है।

'मिश्री': नाम में मिठास, जीवन में कसैली सच्चाई

प्रीतम लखवाल

खगोन मप्र के वरिष्ठ साहित्यकार राकेश राणा का सद्य प्रकाशित उपन्यास 'मिश्री' हिन्दी कथा-साहित्य में पात्र-प्रधान उपन्यासों की परम्परा में एक साहसिक हस्तक्षेप है। जहां अधिकांश उपन्यास घटना, कौतूहल या क्राइम के इर्द-गिर्द घूमते हैं, वहीं 'मिश्री' एक साधारण ग्रामीण स्त्री के असाधारण जीवन-संघर्ष को केंद्र में रखकर सीता, द्रौपदी और लक्ष्मीबाई के पौराणिक प्रतिमानों को तोड़ती है। यह निमाड़ की मिट्टी से उपजी एक नई नारी-चेतना की उद्घोषणा है।

उपन्यास की नायिका 'मिश्री' अभाव में जन्मी एक कली है, जो फूल बनने की जद्दोजहद में है। गांव से शहर तक का उसका सफर केवल भौगोलिक नहीं, मानसिक और सामाजिक भी है। लेखक ने पहले अध्याय में ही उसके सौंदर्य का बिंब खींचा है- मिश्री कचनार के प्रसून सी रक्तिम थी। एक कली फूल बन रही थी। पर यह सौंदर्य ही उसके लिए अभिशाप बनता है। जग्गू की कुदृष्टि, कुकृत्य और समाज की दोहरी नैतिकता झेलकर भी मिश्री टूटती नहीं। प्रेमी रजत को भुलाकर वह सेवा को धर्म बना लेती है। यही निर्णय उसे पारंपरिक 'अबला' से 'सबला' बनाता है।

वरिष्ठ साहित्यकार राणा ने मिश्री को देवत्व नहीं दिया, मनुष्यता दी है। वह ठोकर खाती है, प्रेम करती है, टूटती है और फिर खुद को जोड़ती है। उपन्यास के अंतिम पृष्ठ पर रजत और मिश्री का संवाद इस चरित्र की पराकाष्ठा है: 'मैं आप सबसे यह कहना चाहती हूँ कि अब मैं कभी भी शादी नहीं करुँगी। अब मैंने अपना सारा जीवन आशा घर को समर्पित कर दिया है।' यह निंबोली अब बेसहारा औरतों के जीवन को मिश्री जैसा मीठा

बनाएगी।

मिश्री का यह निंबोली से 'मिश्री' बनना ही उपन्यास का केंद्रीय रूपक है। वह दूसरों के जीवन में मिठास घोलने के लिए अपने जीवन की कड़वाहट पी जाती है।

लेखक की भाषा में निमाड़ की ठेठ सरलता और धाराप्रवाहता है। पहले पृष्ठ पर मिश्री का छत पर कपड़े सुखाना, 'सूखे कपड़े संभाल कर वह खाली टब को उलटा कर उठाने के लिए झुकी ही थी कि चौराहे पर बनी चार मंजिला इमारत के मालिक...'जैसे दृश्य सिनेमाई यथार्थ रचते हैं। वर्णन बोझिल नहीं, कथा को गति देते हैं। संवाद छोटे, चुभते हुए और पात्रानुकूल हैं।

यह उपन्यास स्त्री-विमर्श का रोना नहीं रोता। यह एक्शन दिखाता है। मिश्री बलात्कार की शिकार होने के बाद 'पीड़िता' बनकर नहीं बैठती। वह 'आशा घर' चलाकर दूसरी औरतों के लिए संबल बनती है। राणा जी ने बिना उपदेश के बता दिया कि सशक्तिकरण नारों से नहीं, कर्म से आता है।

'मिश्री कचनार के प्रसून सी रक्तिम थी...' यहां मिश्री अभी भोली है, दुनिया से अनजान। गांव की मिट्टी से शहर की चार मंजिला इमारत तक का उसका आना नियति का पहला क्रूर मजाक है। छत पर कपड़े डालते समय जग्गू की नजर उसे 'वस्तु' बना देती है। लेखक का यह दृश्य-चित्रण बताता है कि शहर की चकाचौंध में औरत का शरीर सबसे पहले निशाने पर होता है।

यहां 'वो' शीर्षक के अंतर्गत मिश्री का चरमोत्कर्ष है। रजत उसे 'टैलेंटेड' कहता है, पर वह जानती है कि समाज उसे 'भोली-भाली' ही समझता है। यहां मिश्री घोषणा करती है: 'अब मैंने अपना सारा जीवन आशा घर को समर्पित कर दिया है।' यह वही लड़की है जो कपड़े सुखा रही थी। अब वह दूसरों के आंसू सुखाने का व्रत ले चुकी है। क्या चीज थी मिश्री! मिश्री जादूगरनी थी। मिश्री हर रूप में मिश्री जैसी मीठी चट थी।

यह पंक्ति उपन्यास का सार है। मिश्री अब व्यक्ति नहीं, विचार है। पीड़ा सहकर भी दूसरों को मीठा देने का विचार। पात्र-प्रधान उपन्यास का नया प्रतिमानः सीता-द्रौपदी से हटकर एक आम लड़की की असाधारण गाथा।

- निमाड़ का साहित्यिक गौरवः धार की भोजशाला से निकला यह उपन्यास अंचल को राष्ट्रीय फलक देता है।

- सकारात्मक स्त्री-शक्तिः रुदन नहीं, संघर्ष। सहानुभूति नहीं, स्वाभिमान।

राकेश राणा जी ने 'मिश्री' में अपना सामर्थ्य झोंक दिया है और यह झोंका गया सामर्थ्य पाठक के हृदय में सीधा उतरता है। यह उपन्यास उन लाखों मिश्री के नाम है जो रोज कड़वाहट पीकर भी दुनिया में मिठास घोल रही हैं। 'मिश्री' नाम की सार्थकता तभी है जब वह घुले। यह उपन्यास आपके मन में जरूर घुलेगा।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।)

उनतीस साल बाद 'इक्का' में दिखे सनी देओल और अक्षय खन्ना

फिल्म के ट्रेलर में जब सबने सनी देओल और अक्षय खन्ना को एक-दूसरे के सामने देखा तो सब इस फिल्म के लिए बेहद उत्सुक हो गए पर यह फिल्म आपको उतना बाँधकर नहीं रखती जितनी उससे अपेक्षा थी। पहले ही सीन से आप जानते हैं कि किसने क्या किया है और आप बस ढाई घण्टे यह इन्तजार करते हैं कि देखें फिल्म निर्माता से उसे कैसे प्रस्तुत किया है ।

इन दिनों फिल्म निर्माता फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति को बेहतर बनाने से ज्यादा उसके ट्रेलर और टीजर को बेहतर बनाने पर काम कर रहे हैं। हाल ही में कई ऐसी फिल्में आईं जिनके ट्रेलर जितने दमदार लगे, फिल्म उतनी ही बोरिंग निकली। 'इक्का' के साथ भी ऐसा ही कुछ प्रतीत होता है। सनी देओल और अक्षय खन्ना ने पिछली बार उन्तीस साल पहले फिल्म- 'बॉर्डर' में साथ काम किया था। अब दोनों एक बार फिर से फिल्म - 'इक्का' में साथ नजर आ रहे हैं । यह फिल्म गत शुक्रवार को ओटीटी पर रिलीज हो चुकी है ।

फिल्म के ट्रेलर में जब सबने सनी देओल और अक्षय खन्ना को एक-दूसरे के सामने देखा तो सब इस फिल्म के लिए बेहद उत्सुक हो गए पर यह फिल्म आपको उतना बाँधकर नहीं रखती जितनी उससे अपेक्षा थी। पहले ही सीन से आप जानते हैं कि किसने क्या किया है और आप बस ढाई घण्टे यह इन्तजार करते हैं कि देखें फिल्म निर्माता से उसे कैसे प्रस्तुत किया है ।

फिल्म की शुरुआत सोमा मित्तल (आकांक्षा रंजन कपूर) की हत्या से होती है। इस हत्या का आरोप बिजनेसमैन शौर्यमान गौर (अक्षय खन्ना) के ऊपर लगता है। अर्जुन अपनी तरफ से केस लड़ने के लिए वकील अर्जुन मेहरा (सनी देओल) को चुनता है, जो अब तक कोई केस नहीं हारा पर अर्जुन यह केस लड़ने से मना कर देता है। दूसरी तरफ अर्जुन को पता चलता है कि उसकी बेटी को कैंसर है। शौर्या उसकी बेटी को बचाने के लिए मदद करने के लिए तैयार होता है पर बदले में वो चाहता है कि अर्जुन उसका केस लड़े। क्या अर्जुन अपनी बेटी के लिए उसूलों के खिलाफ जाएगा? क्या वाकई शौर्या ने ही सोमा का कत्ल किया है ? इसी कथासार के आसपास पूरी फिल्म घूमती रहती है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है, सनी देओल पूरी फिल्म में शान्त,धीमे और बुझे-बुझे से लगे । पूरी फिल्म में मात्र दो दृष्य है जिसमें वो टेबल पर घूँसे मारकर चिल्लाते हैं और एक सीन है जिसमें वो कोर्ट में चीखते हैं। इमोशनल सीन में भी उनकी एक्टिंग असर नहीं करती। एक सीन में वो अपनी बेटी को भागकर अस्पताल देखने पहुँचते हैं और बेटी के पास पहुँचकर बस इतनी ही चिन्ता दिखाते हैं, जैसे वो पड़ोसी की बच्ची हो। दूसरी तरफ अक्षय खन्ना के पास एक बार फिर से करने के लिए कुछ नहीं है। उनका अभिनय बेजान सा महसूस होता है। इस फिल्म को देखने के बाद आप एक बात पर यकीन जरूर करेंगे कि एक कलाकार से उसका बेस्ट निकलवाने में निर्देशक का अहम रोल होता है। ये वही अक्षय हैं जिनको 'धुरंधर' में देखकर सब दीवाने हो गए थे पर यहाँ वो बस रहमान डकैत के लुक में नजर आते हैं। दीया मिर्जा एक बार फिर माँ के रोल में हैं। इससे पहले वो 'अल्फा' में भी माँ के छोटे रोल में नजर आई थीं। दीया के लिए यह जरूरी है कि अब वो कुछ बेहतर भूमिकाएं चुनें, जहाँ उनके पास करने के लिए इमोशनल सीन के अलावा भी कुछ हो। तिलोत्तमा शोम ने अपने चरित्र को ठीक से निभाया है। संजीदा शेख और आकांक्षा रंजन कपूर के पास ज्यादा कुछ करने को था नहीं। आकांक्षा को तो एक डॉयलॉग तक नहीं दिया। जज के किरदार में विजय विक्रम सिंह कुछ नया करते हैं।

शुरुआत से ही यह फिल्म 90 के दशक के प्रारुप (टेम्प्लेट) पर चलती हुई नजर आती है। निर्देशक सिद्धार्थ पी मल्होत्रा को इस कोर्टरूम ड्रामा में इतने ज्यादा संवेदनशील दृष्य डालने की डालने की जरूरत नहीं थी कि उसका रोमांच ही चुक जाये । शुरुआती एक घण्टे में तो हर दो सीन के बाद एक इमोशनल सीन आता है। सीन अधूरे से लगते हैं कि जैसे बस कैमरा शुरू करके कलाकारों से डायलॉग बोलने को कह दिया गया हो। फिर आगे कोर्ट रूम सीन भी थोड़े बहुत देखने लायक हैं पर उतने दमदार नहीं जितनी उम्मीद थी। शायद यहां अक्षय और सनी एक दूसरे के खिलाफ वकील बने खड़े होते तो फिल्म बेहतर हो सकती थी। पूरी फिल्म में दो गाने हैं और दोनों ही बकवास हैं। सबसे निराश करने वाली बात यह है कि सनी देओल और अक्षय खन्ना जैसे दो बड़े कलाकारों को लेकर भी निर्देशक एक भी यादगार सीन नहीं दे पाए।

जीवन के रहस्य

नितिन वैद्य

समत्वं योग उच्यते-जीवन की वास्तविक Win-Win Position

हम सभी चाहते हैं कि जीवन में सदैव Win-Win Position बनी रहे। हर कार्य में सफलता मिले, सम्मान मिले, परिवार में सुख-शांति रहे और परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल रहें। किन्तु वास्तविक जीवन ऐसा नहीं होता। कभी सफलता मिलती है तो कभी असफलता, कभी लाभ होता है तो कभी हानि, कभी प्रशंसा मिलती है तो कभी आलोचना। यही जीवन का स्वाभाविक क्रम है। प्रश्न यह नहीं कि परिस्थितियाँ कैसी हैं, बल्कि यह है कि उन परिस्थितियों में हमारा मन कैसा रहता है। जब मन विचलित होता है, तो सबसे पहले हमारी सोच बदलती है। सोच बदलती है तो व्यवहार बदल जाता है। व्यवहार बदलता है तो हमारे निर्णय प्रभावित होते हैं, और गलत निर्णय कई बार बने-बनाए कार्यों को भी बिगाड़ देते हैं। इसलिए जीवन की सबसे बड़ी चुनौती परिस्थितियों को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि अपने मन को संतुलित रखना है। यही जीवन प्रबंधन की सर्वोच्च कला है।

इस जीवन प्रबंधन का सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है श्रीमद्भगवद्गीता। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से द्वितीय अध्याय (सांख्ययोग) के 48वें श्लोक में कहते हैं–

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥ (2.48)

अर्थात्-हे धनंजय! आसक्ति का त्याग करके योग में स्थित होकर अपना कर्तव्य-कर्म करो। सफलता और असफलता, लाभ और हानि, जय और पराजय इन सभी में समान भाव रखो। इसी समभाव का नाम योग है।

'समत्वं योग उच्यते' गीता का केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है। समत्व का अर्थ है–सुख-दुःख में समान रहना, लाभ-हानि में विचलित न होना, मान-अपमान में संतुलित रहना, सफलता मिलने पर अहंकार न करना और असफलता मिलने पर निराश न होना। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि मनुष्य संवेदनहीन बन जाए। इसका वास्तविक अर्थ है कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों, उसकी बुद्धि स्थिर, शांत और विवेकपूर्ण बनी रहे।

इसे एक सरल उदाहरण से समझिए। एक किसान पूरे वर्ष परिश्रम करके फसल उगाता है। यदि वर्षा समय पर हो जाए तो वह ईश्वर का धन्यवाद करता है, और यदि प्राकृतिक आपदा से फसल नष्ट हो जाए तो वह निराश

होकर बैठने के स्थान पर अगले मौसम की तैयारी करता है। यही समत्व है। इसी प्रकार एक विद्यार्थी पूरी मेहनत से परीक्षा देता है। यदि अपेक्षित परिणाम न मिले, तो वह टूटता नहीं, बल्कि अपनी कमियों को सुधारकर पुनः प्रयास करता है। यही गीता का योग है।

वास्तव में Win-Win Position का अर्थ यह नहीं कि जीवन में कभी हार न मिले। इसका अर्थ है कि प्रत्येक परिस्थिति में हम अपने मन की विजय बनाए रखें। बाहरी सफलता और असफलता अस्थायी हैं, परन्तु जो व्यक्ति अपने मन, विचार और व्यवहार पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही सच्चा विजेता है। उसका संतुलन ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है, और यही शक्ति अंततः उसे स्थायी सफलता की ओर ले जाती है।

आइए, हम भी भगवान श्रीकृष्ण के इस दिव्य संदेश को अपने जीवन का आधार बनाएँ। परिस्थितियाँ बदलती रहेंगी, लोग बदलते रहेंगे, समय बदलता रहेगा; किन्तु यदि हमारा मन समभाव में स्थित रहेगा, तो जीवन की प्रत्येक चुनौती अवसर बन जाएगी। यही गीता का संदेश है, यही जीवन प्रबंधन का सर्वोत्तम सूत्र है और यही वास्तविक Win-Win Position है।

श्री कृष्ण शरणं मम।

कलेक्टर ने शहर में विकास कार्यों का किया निरीक्षण

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने शनिवार को शहर का भ्रमण कर विभिन्न विकास कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने सर्किट हाउस में चल रहे रिनोवेशन कार्य का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगति की समीक्षा की। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने प्रस्तावित नवीन सर्किट हाउस के संबंध में भी हाउसिंग बोर्ड के अधिकारियों से चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान एसडीएम डॉ. अभिजीत सिंह सहित हाउसिंग बोर्ड के अधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मेंटेनेंस के कारण आज बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा 12 जुलाई को 33/11 केव्ही सब स्टेशन टिकरी का मेंटेनेंस कार्य किया जाएगा। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल जोन-2 के प्रबंधक शहर ने बताया कि रविवार को मेंटेनेंस कार्य के चलते सुबह 10 से दोपहर 2 बजे 11 केव्ही फीडर टिकारी के बच्चा जेल, प्रताप वार्ड, महावीर वार्ड, अखाड़ा चौक, जेरी चौक, गाड़ाघाट पम्प, पटने आटा चक्की, नागदेव मंदिर टिकारी, ईशाई चौक, नर्स ट्रेनिंग स्कूल, कृष्णापुरा, ठाकरे की चाल मोती वार्ड, डॉ कसेरा, गोठी कालोनी, दादावाड़ी, गोठी कालोनी, फॉसी खदान, डॉ.पाड़ी गौठाना नाका, शारदा नगर वैष्णवी नगर, गंगोत्री कालोनी, कमानी गेट, थाना चौक मांग मोहल्ला, दुर्गा वार्ड, गूड़ बाजार, गांधी चौक, साईं मंदिर टिकारी, ग्रीन स्टेट कालोनी, भुजरिया घाट आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसी प्रकार रविवार को सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक 11 केव्ही फीडर सदर के एमपीईबी कालोनी, अग्निहोत्री कालोनी, सतपाल आश्रम, प्रताप वार्ड, सुपर किराना, सिंडीकेट बैंक, एसबीआई बैंक, गेंदा चौक, ब्रह्मकुमारी आश्रम, मानस नगर, आईटी आई, एफसीआई गोडाउन, विनायक रेसीडेन्सी, दारू भटटी रोड, मिल्क प्लॉट, एचएमटी फेक्ट्री तथा 11 केव्ही टाउन - 1 के कोर्ट परिसर, मुल्ला पेट्रोल पम्प, पुलिस पेट्रोल पम्प, पुलिस कन्ट्रोल रुम, जिला पंचायत, ट्राइबल कार्यालय, एमपीईबी कार्यालय आदि क्षेत्र क्षेत्र में विद्युत सप्लाई प्रभावित रहेगी। इसके अलावा रविवार को सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक 11 केव्ही टाउन - 2 के लिंक रोड, चंद्रशेखर वार्ड, कारगील चौक, पीडब्ल्यूडी कॉलोनी, बारस्कर कॉलोनी, इंदिरा वार्ड, आजाद वार्ड, गर्ल्स कॉलेज, कोठी बाजार, कंपनी गार्डन, वीवीएम कालेज, तलैया मोहल्ला, अम्बेडकर चौक, उमप किराना, राठी अस्पताल, ड्रीम होम्स कालोनी, नेहरू पार्क, बस स्टेंड, एमजी काम्प्लेक्स, लल्ली चौक, सीमेंट रोड आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। उन्होंने बताया कि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

प्राकृतिक जीवनशैली अपनाएं, बीमारियों से बचें : डॉ. हरेकृष्ण शर्मा

निःशुल्क योग-प्राकृतिक चिकित्सा शिविर में 100 से अधिक लोगों ने लिया लाभ

बैतूल। स्वदेशी जागरण मंच एवं नव वसुंधरा श्रृंगार जन कल्याण फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में स्वस्थ मध्य प्रदेश अभियान के अंतर्गत विशाल निःशुल्क योग व प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। जिला प्रचार प्रमुख योगेश रोचलानी ने बताया कि यह अभियान देश-विदेश में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के विस्तार में सक्रिय अभियान के मार्गदर्शक एवं संरक्षक डॉ. अंकेश सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। जिला संयोजक धर्मेंद्र सिंह परिहार ने बताया कि शिविर की शुरुआत प्रातःकालीन योग सत्र से हुई, जिसमें 100 से अधिक नागरिकों ने उत्साहपूर्वक योगासन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया। इसके बाद प्रतिभागियों का निःशुल्क नाड़ी परीक्षण, स्वास्थ्य परामर्श तथा उनकी प्रकृति और स्वास्थ्य स्थिति के अनुसार व्यक्तिगत डाइट चार्ट उपलब्ध कराया गया। आयुष विभाग की ओर से आयुर्वेद एवं होम्योपैथी चिकित्सा परामर्श के साथ निःशुल्क औषधि वितरण भी किया गया। मुख्य वक्ता नाड़ी वैद्य एवं योग-प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. हरेकृष्ण शर्मा ने कहा कि प्राकृतिक जीवनशैली ही प्राकृतिक चिकित्सा का मूल आधार है। उन्होंने कहा कि अधिकांश बीमारियां गलत जीवनशैली, अनियमित दिनचर्या, तनाव, जंक फूड, रासायनिक भोजन, शारीरिक

निष्क्रियता और प्रकृति से बढ़ती दूरी का परिणाम हैं। यदि व्यक्ति नियमित योग, प्राणायाम, ध्यान, सात्विक एवं संतुलित आहार, पर्याप्त जल सेवन, समय पर विश्राम तथा सकारात्मक सोच अपनाए तो मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, थायराइड, जोड़ों का दर्द, पाचन संबंधी विकार और मानसिक तनाव जैसी जीवनशैली जनित बीमारियों से बचाव संभव है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा केवल रोगों को दबाने की पद्धति शरीर की स्व-चिकित्सा शक्ति (सेल्फ हीलिंग पावर) को जागृत करने वाली वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली है। उन्होंने प्रत्येक परिवार से प्रतिदिन योग करने, प्राकृतिक एवं स्थानीय भोजन अपनाने, नशामुक्त जीवन जीने और स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान करते हुए कहा कि प्राकृतिक जीवनशैली अपनाकर ही स्वस्थ, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव है। मुख्य नगर पालिका अधिकारी नवनीत पांडे ने कहा कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम हैं और ऐसे आयोजनों का नियमित रूप से होना आवश्यक है। आयुष विभाग की नोडल अधिकारी डॉ. सरिता डेहरिया ने योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा को प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर जोर देते हुए आयुष चिकित्सा पद्धतियों की उपयोगिता बताई। कार्यक्रम में प्रांत महिला सहकार्य प्रमुख हेमलता कुंभारे, विभाग सहसंयोजक निलेश गिरी गोस्वामी तथा जिला संयोजक धर्मेंद्र सिंह परिहार ने भी स्वास्थ्य जागरूकता, स्वदेशी जीवनशैली और सेवा कार्यों को बढ़ावा देने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन निलेश गिरी गोस्वामी ने किया। इस अवसर पर जिला युवा आयाम प्रमुख उज्ज्वल प्रताप सिंह ठाकुर, जिला महिला सहकार्य प्रमुख ममता, जिला टोली सदस्य वर्षा खाड़े, सीमा साहू, रीता वाघमारे, दीपक ठाकरे, रोहित पवार सहित कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। अंत में सभी अतिथियों, चिकित्सकों, स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए बैतूल जिले के विभिन्न क्षेत्रों में भी ऐसे निःशुल्क योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया गया।

पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य और परिवार संरक्षण के मुद्दों पर एसपी के पास पहुंचा एसआईएफ बैतूल

बैतूल। पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य, परिवार संरक्षण और समाज में जनजागरूकता को लेकर सक्रिय सेव इंडियन फैमिली एसआईएफ बैतूल ने शुक्रवार को एसपी कार्यालय पहुंचकर एसपी को ज्ञापन सौंपा। संगठन के प्रतिनिधियों ने सामाजिक सरोकारों से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा करते हुए अपने सुझाव और चिंताएं रखीं। एसपी ने सभी बिंदुओं को गंभीरता से सुना, सकारात्मक चर्चा की और संगठन के सामाजिक प्रयासों की सराहना करते हुए भविष्य में हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक ने ज्ञापन सहर्ष स्वीकार किया तथा समाजहित में किए जा रहे जागरूकता अभियानों की सराहना की। संगठन ने पुलिस अधीक्षक के सकारात्मक दृष्टिकोण, मार्गदर्शन और सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सेव इंडियन फैमिली बैतूल आगे भी समाजहित, पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य, परिवार संरक्षण और जनजागरूकता से जुड़े कार्यों को पूरी तरह शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक तरीके से निरंतर संचालित करता रहेगा। ज्ञापन सौंपने के

दौरान संगठन की ओर से डॉ. संदीप गोहे, चंद्रप्रकाश झारे, अविनाश देशमुख और अखलेश चौकीकर सहित अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि सेव इंडियन फैमिली बैतूल विगत कई वर्षों से पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक परामर्श, वैवाहिक विवादों में मार्गदर्शन, आत्महत्या रोकथाम, कानूनी जागरूकता तथा जरूरतमंद पुरुषों और उनके परिवारों को निःशुल्क सहायता उपलब्ध कराने के लिए कार्यरत है। संगठन समाज में संवाद, जागरूकता और सकारात्मक समाधान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निरंतर विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

सुनीता देशमुख महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष नियुक्त

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के निर्देशानुसार महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष अश्विनी परांजपे, संभाग प्रभारी कांतदेव सिंह, जिला संगठन प्रभारी सूदर्शन गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार की सहमति से महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष का दायित्व सुनीता देशमुख को मिलने पर नवनियुक्त महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष का जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में पार्टी का अंगवस्त्र पहनाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंटकर भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने स्वागत किया। इस अवसर पर श्री पंवार ने कहा कि महिला मोर्चा भाजपा परिवार का अहम हिस्सा है। सुनीता देशमुख हमारी पार्टी की सहज सरल और सशक्त कार्यकर्ता है जिन पर प्रदेश नेतृत्व ने भरोसा जताया है यह निश्चित रूप से उस विश्वास पर खरा उतरते हुए मोर्चे को नऐ आयाम तक लेकर जाएगी। इस दौरान नवनियुक्त महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष सुनीता देशमुख ने कहा कि प्रदेश और जिला नेतृत्व ने जो विश्वास जताया है

उस विश्वास पर पूरी निष्ठा के साथ खरा उतरते हुए सभी बहनों के साथ मिलकर संगठन को नई उचांई प्रदान करने का प्रयास करूंगी। इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री कृष्णा गायकी, जिला उपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे, रश्मि साहू, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री ममता मालवी, नपाउपाध्यक्ष महेश राठौर, कोठीबाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैद्य, खेडीसावलीगढ़ू मंडल अध्यक्ष नीतिन बारस्कर, बैतूलबाजार मंडल अध्यक्ष सुनील पंवार, झल्लार मंडल पुष्पा खाडे, नीलम वागद्रे, माधुरी साबले, कृष्णा अमरूते, सरिता रघुवंशी, मीना बोरबन, वर्षा खाडे, स्वाती राठौर, सावन्या शेषकर, राहूल वडुकले, गोलू बारस्कर, कुणाल शर्मा सहित बडी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में अपर सत्र न्यायाधीश श्री अतुल सक्सेना ने साइबर लॉ विषय पर दी सारगर्भित समझाईश

सोहागपुर। जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, नर्मदापुरम के निर्देशानुसार तथा अध्यक्ष श्री अतुल सक्सेना, अपर सत्र न्यायाधीश, सोहागपुर के आदेशानुसार साइबर लॉ,विधिक साक्षरता शिविर एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर न्यायिक मजिस्ट्रेट व्यवहार न्यायाधीश वर्ग 2 श्री तेजदीप सिंह , व्यवहार न्यायाधीश वर्ग 1अपेक्षा यादव आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में अपर सत्र न्यायाधीश श्री अतुल सक्सेना ने जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय में साइबर लॉ , विधिक साक्षरता एवं विधिक सहायता के संबंध में सारगर्भित उद्बोधन देकर विस्तृत समझाईस दी गई। आपने कहा कि वर्तमान समय में साइबर क्राइम की वारदातों की नित्य प्रति वृद्धि हो रही है। इस कारण हमें जागरूक रहना चाहिए। हमें किसी अनजान वाट्स एप, की फाइलों को नहीं खोला चाहिए। वहीं अनजान नंबरों से आने काल भी न उठाए। आजकल ऐसी फाइल खोली से आपको जाने अंजाने में नुकसान हो सकता है। इस कारण आपने नागरिकों से सजग रहने का आव्हान किया। इस अवसर पर वरिष्ठ वकील जेपी माहेश्वरी, वकील बीके शर्मा, वकील संजय तिवारी, वकील जयभानु सिंह चंदेल, वकील भानुप्रकाश तिवारी, वकील पचोरी जी,कैलाश पालीवाल, जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय प्राचार्य एन के नीखरा, न्याय का अधिकारी , शिक्षक शिक्षिका शिक्षक के छात्रगण आदि उपस्थित थे। आभार कैलाश पालीवाल ने व्यक्त किया। इसके अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

भूमि पूजन: प्रदेश सरकार नगरों की मूलभूत सुविधाओं का विस्तार कर रही है : क्षेत्रीय विधायक विजयपाल सिंह

सोहागपुर। प्रदेश भाजपा सरकार नगरों में मूलभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए लगातार कार्य कर रही है। सड़क निर्माण से क्षेत्र के नागरिकों को आवागमन में सुविधा मिलेगी उक्त उद्गार कार्यक्रम मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने सीसी रोड का भूमिपूजन के अवसर पर कहेंइस अवसर पर नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, सेवानिवृत्त शिक्षक एस एस मंडलोई ब्लाक भाजपा अध्यक्ष अश्विनी सरोज, सरस्वती शिशु मंदिर व्यवस्थापक संजीव दुबे,उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, लोक निर्माण विभाग समिति सभापति कविता दीपक साहू, पार्षद गौरव पालीवाल, पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय, पार्षद रविशंकर उइके, संध्या नागवंशी, नितिन निक्की सूर्यवंशी, मुस्लिम त्यौहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान, अभिनव पालीवाल, संजीव शुक्ला, रामगोपाल चौबे, आदि उपस्थित थे। विधानसभा विजयपाल सिंह ने आगे कहा कि इस सड़क निर्माण से वार्ड का समग्र विकास होगा। आपने सड़क निर्माण में गुणवत्ता बरतने के साथ निर्माण कार्य को समय सीमा में करने के निर्देश दिए।नगरपालिका अधिकारी धर्मेन्द्र शर्मा ने बताया कि नगर पंचायत परिषद द्वारा मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना योजना चतुर्थ

चरण) के अंतर्गत रामगंज वार्ड में खेड़ापति मंदिर के पास लगभग 12 लाख 30 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाले सी.सी. रोड निर्माण कार्य भूमिपूजन किया गया है।नगर में विकास कार्यों में सहयोग करने की अपील की गई।कार्यक्रम में उपयंत्री बृजेश खानोरकर, नगर पंचायत परिषद के कर्मचारियों के अलावा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संजीव शुक्ला ने किया था। इसके पूर्व विधायक विजयपालसिंह से मंत्रोच्चारण के साथ पूजन करवाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ अतिथियों का पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया।

बनेगी फोर लाइन सड़क - क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने एक अन्य कार्यक्रम में अपने उद्बोधन कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि नर्मदापुरम से लेकर बनखेड़ी तक 1600 करोड़ रुपए की लागत से फोर लाइन सड़क का निर्माण बरसात के उपरांत किया जाएगा। इससे नागरिकों को यातायात में काफी सुविधा होगी। इसके साथ ही नगरों को बाईपास सड़कें मिलेगी। इसी के साथ विधायक विजयपाल सिंह ने करोड़ की लागत से बनने वाली 11 सड़कों एवं 3 सामुदायिक भवन का भूमिपूजन किया। आपने इस अवसर पर कि नगर विकास के लिए पैसों की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

उत्कृष्ट सिनेमा

समकालीन दौर की दस अनुपम कृतियां

भारतीय सिनेमा ने अपने लंबे और गौरवशाली सफर में कला और मनोरंजन का एक ऐसा ताना-बाना बुना है, जिसने न केवल देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। विशेष रूप से इक्कीसवीं सदी की शुरुआत के बाद से, फिल्म निर्माताओं ने पारंपरिक लीक से हटकर ऐसी कहानियों को परदे पर उतारा है, जो समाज का आईना भी बनती हैं और दर्शकों के दिलों को झकझोरती भी हैं। व्यावसायिक सफलता और कलात्मक गहराई का यह अनूठा संगम इन फिल्मों को आम सिनेमा से अलग कर एक उत्कृष्ट श्रेणी में स्थापित करता है।

इंटरनेट के दौर में जब दर्शक किसी भी कृति की गुणवत्ता को आंकने के लिए वैश्विक समीक्षाओं और रेटिंग पर भरोसा करते हैं, तब इन फिल्मों ने असाधारण रूप से उच्च अंक प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। ये कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये मानवीय भावनाओं, सामाजिक विसंगतियों और व्यक्तिगत संघर्षों का एक जीवंत दस्तावेज हैं। आइए जानते हैं हिंदी सिनेमा की उन दस चुनिंदा कलाकृतियों के बारे में, जिन्हें दर्शकों और समीक्षकों ने सराहा है।

अंधाधुन : यह आधुनिक सिनेमा की एक ऐसी जादुई प्रस्तुति है जो दर्शकों को पल भर के लिए भी अपनी जगह से हिलने नहीं देती। श्रीराम राघवन द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक ऐसी रहस्यमयी दुनिया का निर्माण करती है जहाँ जो दिखाई देता है, वह सच नहीं होता और जो सच है, वह दिखाई नहीं देता। फिल्म के मुख्य कलाकारों में आयुष्मान खुराना, तब्बू और राधिका आप्टे शामिल हैं। कहानी आकाश नाम के एक ऐसे पियानो वादक के इर्द-गिर्द घूमती है जो दुनिया की नजरों में पूरी तरह से अंधा है, लेकिन वास्तव में वह अंधे होने का ढोंग कर रहा होता है। उसका यह ढोंग तब एक भयानक दुःस्वप्न में बदल जाता है जब वह अनजाने में एक पूर्व अभिनेता की हत्या का एकमात्र प्रत्यक्षदर्शी बन जाता है। यह कहानी लालच, अपराध और इंसानी फितरत के स्याह पहलुओं को बेहद महीन तरीके से उजागर करती है।

दंगल : नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी यह फिल्म केवल खेल पर आधारित कहानी नहीं है, बल्कि यह रूढ़ियों को तोड़ने और पिता-पुत्री के अटूट विश्वास का एक महाकाव्य है। फिल्म में मुख्य भूमिका आमिर खान, साक्षी तंवर, फातिमा सना शेख और सान्या मल्होत्रा ने निभाई है। यह फिल्म हरियाणा के एक पूर्व पहलवान महावीर सिंह फोगाट के वास्तविक जीवन पर आधारित है, जिनका अपनी बेटियों को कुश्ती की दुनिया में चैंपियन बनाने का एक ही सपना है। पिता अपनी बेटियों को इस तरह तराशता है कि वे अंतरराष्ट्रीय पटल पर देश का नाम रोशन करती हैं।

ब्लैक फ्राइडे : अनुराग कश्यप निर्देशित यह फिल्म भारतीय यथार्थवादी सिनेमा का एक मील का पत्थर मानी जाती है। इसमें केके मेनन, पवन मल्होत्रा, आदित्य श्रीवास्तव और जाकिर हुसैन जैसे सशक्त अभिनेताओं ने अपने अभिनय का लोहा मनवाया है। यह फिल्म मुंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों और उसके बाद पुलिस द्वारा की गई व्यापक जांच की कड़वी सच्चाई को बिना किसी मिर्च-मसाले के पेश करती है।

रंग दे बसंती : राकेश ओमप्रकाश मेहरा द्वारा निर्देशित यह फिल्म युवाओं के भीतर सोई हुई देशभक्ति और क्रांति की ज्वाला को जगाने का काम करती है। यह फिल्म आमिर खान, सिद्धार्थ, कुणाल कपूर, सोहा अली खान, शरमन जोशी, आर माधवन और एलिस पैटन जैसे कलाकारों से सजी है। कहानी कुछ ऐसे लापरवाह और दिशाहीन कॉलेज के छात्रों की है, जिन्हें एक ब्रिटिश वृत्तचित्र निर्माता अपनी फिल्म में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों जैसे भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद की भूमिका निभाने के लिए चुनती है।

- दृश्यम : निशिकांत कामत के कुशल निर्देशन में बनी यह फिल्म पारिवारिक प्रेम और एक आम आदमी की तीक्ष्ण बुद्धि की अद्भुत मिसाल है। अजय देवगन, तब्बू, श्रिया सरन और इशिता दत्ता अभिनीत यह कहानी एक सीधे-साधे और कम पढ़े-लिखे इंसान विजय सालगांवकर के बारे में है, जो केवल केबल टीवी पर फिल्में देखकर दुनिया की समझ रखता है। उसका सुखी परिवार तब संकट में पड़ जाता है जब उसकी बेटी से अनजाने में एक रसूखदार पुलिस अधिकारी के बेटे की हत्या हो जाती है। अपने परिवार को जेल जाने से बचाने के लिए विजय एक ऐसी काल्पनिक कहानी और अकाट्य योजना बुनता है, जिसे तोड़ पाना कानून के रखवालों के लिए भी असंभव हो जाता है।

स्वदेश : आशुतोष गोवारिकर के निर्देशन में बनी यह फिल्म मातृभूमि के प्रति दायित्व का एक बेहद खूबसूरत दस्तावेज है। शाहरुख खान, गायत्री जोशी और किशोरी बल्लाल अभिनीत यह कहानी मोहन भार्गव नाम के एक सफल वैज्ञानिक की है जो अमेरिका के एक बड़े

अंतरिक्ष संस्थान में काम करता है। वह अपनी बचपन की दाई मां को अपने साथ ले जाने के लिए भारत के एक पिछड़े गांव चरनपुर आता है। यहां वह जातिवाद, निरक्षरता, बिजली की समस्या और गरीबी को नजदीक से देखता है, तो उसका अंतर्मन बदल जाता है। वह गाँव में पानी और बिजली की समस्या को दूर करने के लिए ग्रामीणों के साथ मिलकर एक छोटा पनबिजली संयंत्र स्थापित करता है।

पान सिंह तोमर : तिग्मांशु धूलिया द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक ऐसे नायक की त्रासदी है जिसे व्यवस्था ने खलनायक बनने पर मजबूर कर दिया। फिल्म में इरफान खान ने मुख्य भूमिका निभाई, जबकि माही गिल ने उनकी पत्नी का किरदार निभाया है। यह एक वास्तविक जीवन की कहानी है जो सात बार के राष्ट्रीय खेल चैंपियन पान सिंह तोमर के सफर को दिखाती है। सेना का यह जांबाज सिपाही जब खेल की दुनिया से सेवानिवृत्त होकर अपने गांव लौटता है, तो अपनी पुश्तैनी जमीन को दबंगों से बचाने के लिए कानून का दरवाजा खटखटाता है।

मसान : नीरज घेवान के निर्देशन में बनी यह फिल्म जीवन, मृत्यु, प्रेम और मोक्ष के शाश्वत चक्र को बेहद संवेदनशीलता के साथ छूती है। ऋचा चड्ढा, विक्की कौशल, संजय मिश्रा और श्वेता त्रिपाठी जैसे मंझे हुए कलाकारों से सजी यह फिल्म पवित्र नगरी बनारस के घाटों पर आकार लेती है। यहाँ दो अलग-अलग कहानियाँ समांतर चलती हैं; एक तरफ देवी है जो सामाजिक रूढ़ियों और पुलिसिया ब्लैकमेलिंग का शिकार है, तो दूसरी तरफ दीपक है जो श्मशान घाट पर लाशें जलाने वाले समुदाय से आता है और एक उच्च वर्ग की लड़की से प्रेम कर बैठता है। जब दीपक की प्रेमिका की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है, तो वह अपनी ही प्रेमिका का दाह संस्कार करता है।

भाग मिल्खा भाग : राकेश ओमप्रकाश मेहरा द्वारा निर्देशित यह फिल्म भारत के सबसे महान धावकों में से एक मिल्खा सिंह के असाधारण जीवन की गाथा है। फरहान अख्तर, सोनम कपूर, दिव्य दत्ता और पवन मल्होत्रा अभिनीत यह फिल्म विभाजन के दर्द से शुरू होती है, जहाँ एक छोटा बच्चा अपने माता-पिता को अपनी आँखों के सामने खो देता है।

शरणार्थी शिविरों से होते हुए, सेना में भर्ती होने और फिर अपनी दौड़ने की अद्भुत क्षमता के बल पर विश्व पटल पर छा जाने का मिल्खा सिंह का यह सफर बेहद प्रेरणादायक है।

हैदर : विशाल भारद्वाज के निर्देशन में बनी यह फिल्म विलियम शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक हैमलेट का एक बेहतरीन और साहसिक भारतीय रूपांतरण है। शाहिद कपूर, तबू, केके मेनन, श्रद्धा कपूर और इरफान खान के शानदार अभिनय से सजी यह फिल्म नब्बे के दशक के अशांत कश्मीर की पृष्ठभूमि पर आधारित है। हैदर अपने पिता के अचानक लापता होने की खबर सुनकर अलीगढ़ से वापस कश्मीर आता है। वहाँ आकर उसे पता चलता है कि उसके पिता को सुरक्षा बलों ने पकड़ लिया है और उसकी मां उसके सगे चाचा के साथ प्रेम संबंधों में है। पिता की मौत का बदला लेने की चाहत और अपनी मां के प्रति प्रेम व घृणा के बीच झूलता हैदर धीरे-धीरे पागलपन की कगार पर पहुंच जाता है। कश्मीर की बर्फबारी, राजनीतिक तनाव और मानवीय संवेदनाओं का ऐसा मिश्रण इस फिल्म को सिनेमा की दुनिया का एक अनमोल रत्न बनाता है।

रियल बॉक्स

प्रतिबद्धता के सफर में 'पद्मश्री' से मिली पहचान

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा में जब ऐसे कलाकारों की चर्चा होती है जिन्होंने लोकप्रियता और अभिनय क्षमता के बीच संतुलन बनाया, तो आर माधवन का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वे उन अभिनेताओं में शामिल हैं जिन्होंने कभी भी स्वयं को चर्चा में बनाए रखने के लिए विवादों, प्रचार अभियानों या निजी जीवन के प्रदर्शन का सहारा नहीं लिया। उनका पूरा ध्यान हमेशा अपने काम पर रहा। यही कारण है कि वे अलग-अलग पीढ़ियों के दर्शकों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं। उनकी फिल्मों की संख्या बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जिन फिल्मों में उन्होंने काम किया, उनमें अधिकांश में उनका अभिनय लंबे समय तक याद रखा गया। अभिनय की दुनिया में आने से पहले उन्होंने टेलीविजन धारावाहिकों और विज्ञापनों में काम किया। इसी दौर में उनकी सहज अभिनय शैली ने फिल्म निर्देशकों का ध्यान आकर्षित किया।

आर माधवन को ऐसे कलाकारों की बिरादरी में गिना जाता है, जिन्होंने अभिनय के साथ लेखक, निर्माता और निर्देशक के रूप में भी अपनी क्षमता का परिचय दिया। भारत सरकार का उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जाना, एक सफल अभिनेता का सम्मान नहीं, बल्कि उस कलाकार की लोकप्रियता और गुणवत्ता का भी सम्मान है। सिर्फ अभिनय ही नहीं, उनकी निजी जिंदगी भी उतनी ही प्रेरणादायक है। उन्होंने अपने बेटे वेदांत माधवन को फिल्मों की चमक-दमक से दूर रखकर खेलों की दुनिया में आगे बढ़ने का अवसर दिया। आज वेदांत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और अनेक स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। आर माधवन की यह यात्रा बताती है कि सफलता केवल पर्दे पर नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों में भी दिखाई देती है।

उनके फिल्मी जीवन की सबसे बड़ी शुरुआत वर्ष 2000 में तमिल फिल्म 'अलाईपायुथे' से हुई, जिसका निर्देशन मणिरत्नम ने किया था। इस फिल्म ने उन्हें दक्षिण भारतीय सिनेमा का बड़ा सितारा बना दिया। इसके बाद उन्होंने मिन्नाले, रन, कन्नथिल मुथमित्तल, अंबे शिवम, इरुधि सुत्रु, विक्रम वेधा और 'रॉकेट्री : द नंबी इफेक्ट' जैसी फिल्मों में यादगार अभिनय किया। हर फिल्म में उनका किरदार पिछले किरदार से अलग दिखाई देता है। हिंदी सिनेमा में उनकी पहचान वर्ष 2001 में आई फिल्म 'रहना है तेरे दिल में' से बनी। फिल्म ने उस समय बहुत बड़ी व्यावसायिक सफलता नहीं पाई, लेकिन समय के साथ यह युवाओं की पसंदीदा फिल्मों में शामिल हो गई। आज भी इस फिल्म में निभाया गया उनका मैडी का किरदार सबसे लोकप्रिय रोमांटिक पात्रों में गिना जाता है। इसके बाद उन्होंने रंग दे बसंती, गुरु, 3 इडियट्स, तनु वेड्स मनु, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स, थ्री इडियट्स, रंग दे बसंती, साला खडूस, हिसाब बराबर, शैतान और 'केसरी चैप्टर 2' जैसी फिल्मों में अलग-अलग तरह के किरदार निभाए। विशेष रूप से '3 इडियट्स' में फरहान कुरैशी का उनका अभिनय आज भी युवाओं को प्रेरित करता है। यह किरदार केवल एक छात्र की कहानी नहीं था, बल्कि अपने सपनों का पीछा करने का संदेश भी देता था। वहीं 'तनु वेड्स मनु' श्रृंखला में एक संयमित और संवेदनशील पति का किरदार निभाकर यह दिखाया कि बिना अधिक संवादों के भी प्रभावशाली अभिनय किया जा सकता है।

आर माधवन की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना 'रॉकेट्री : द नंबी इफेक्ट' रही। इस फिल्म में उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक नंबी नारायणन की भूमिका निभाने के साथ-साथ निर्देशन, लेखन और निर्माण की जिम्मेदारी भी संभाली। यह फिल्म केवल एक जीवनी नहीं थी, बल्कि भारतीय वैज्ञानिकों के संघर्ष और सम्मान की कहानी भी थी। फिल्म को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। इस फिल्म ने यह सिद्ध किया कि माधवन केवल अभिनेता ही नहीं, बल्कि गंभीर फिल्मकार भी हैं। हाल के वर्षों में उन्होंने अपने किरदारों के चयन में और अधिक विविधता दिखाई है। 'शैतान' में उन्होंने एक रहस्यमय और नकारात्मक चरित्र निभाकर दर्शकों को चौंका दिया। वर्षों तक सकारात्मक छवि वाले अभिनेता रहे माधवन ने इस भूमिका के माध्यम से साबित किया कि वे किसी भी तरह के किरदार को विश्वसनीय बना सकते हैं।

हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'धुरंधर' में भी उनके अभिनय की व्यापक चर्चा हुई। फिल्म की दोनों कड़ियों में उन्होंने अपने किरदार को जिस परिपक्वता और संतुलन के साथ निभाया, उससे एक बार फिर स्पष्ट हुआ कि वे केवल लोकप्रिय अभिनेता नहीं, बल्कि मजबूत चरित्र अभिनेता

भी हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे किसी भी भूमिका को बाहरी दिखावे के बजाय उसके मनोवैज्ञानिक पक्ष से समझते हैं। यही कारण है कि उनके अधिकांश पात्र वास्तविक जीवन के करीब महसूस होते हैं। आर माधवन की कार्यशैली भी उन्हें अन्य कलाकारों से अलग बनाती है। वे हर वर्ष कई फिल्में करने की होड़ में नहीं रहते। वे केवल वही परियोजनाएं स्वीकार करते हैं जिनकी कहानी और पात्र उन्हें प्रभावित करते हैं। अनेक बार उन्होंने बड़े बजट की फिल्मों को भी केवल इसलिए अस्वीकार किया क्योंकि उन्हें लगा कि उनका किरदार पर्याप्त प्रभावशाली नहीं है। यह निर्णय व्यावसायिक दृष्टि से कठिन हो सकता है, लेकिन इससे उनकी कलात्मक विश्वसनीयता बनी रही।

उनकी यही गंभीरता और भारतीय सिनेमा में लंबे समय तक दिए उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। यह सम्मान केवल लोकप्रियता के आधार पर नहीं दिया जाता, बल्कि संबंधित क्षेत्र में लंबे समय तक किए गए विशिष्ट योगदान को ध्यान में रखकर प्रदान करने की परंपरा है। माधवन ने भारतीय सिनेमा को कई यादगार किरदार दिए, क्षेत्रीय और हिंदी फिल्मों के बीच सेतु का कार्य किया तथा निर्देशन और निर्माण के माध्यम से भी गुणवत्ता को प्राथमिकता दी। इन सभी उपलब्धियों ने उन्हें इस सम्मान का पात्र बनाया। माधवन का व्यक्तित्व केवल अभिनय तक सीमित नहीं है। वे सामाजिक विषयों पर भी संतुलित और जिम्मेदार दृष्टिकोण रखते हैं। वे अनावश्यक विवादों से दूर रहते हैं और सार्वजनिक मंचों पर भी संयमित भाषा का प्रयोग करते हैं। फिल्म उद्योग में उनकी छवि एक अनुशासित, समय का सम्मान करने वाले और सहयोगी कलाकार की रही है। अनेक युवा अभिनेता उन्हें प्रेरणा के रूप में देखते हैं।

उनके पारिवारिक जीवन का सबसे उल्लेखनीय पक्ष उनके बेटे वेदांत माधवन की उपलब्धियां हैं। जहां फिल्मी परिवारों में अक्सर अगली पीढ़ी अभिनय की तरफ बढ़ती है, वहीं माधवन ने अपने बेटे की रुचि को प्राथमिकता दी। वेदांत ने बचपन से ही तैराकी में गहरी दिलचस्पी दिखाई। पिता ने उसकी प्रतिभा को पहचानकर उसे आवश्यक प्रशिक्षण और सुविधाएं उपलब्ध कराईं। इसके लिए परिवार ने अपने जीवन की कई प्राथमिकताओं में बदलाव भी किया, ताकि वेदांत को बेहतर प्रशिक्षण मिल सके। वेदांत माधवन आज देश के उभरते हुए अंतरराष्ट्रीय तैराकों में गिने जाते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अनेक पदक जीते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है। विभिन्न आयु वर्ग की प्रतियोगिताओं में उन्होंने स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक हासिल किए हैं। विशेष रूप से मध्यम और लंबी दूरी की फ्रीस्टाइल स्पर्धाओं में उनका प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा है। कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने भारतीय तैराकी के लिए नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

माधवन अपने बेटे की सफलता का श्रेय उसकी मेहनत और अनुशासन को देते हैं। वे कई बार कह चुके हैं कि उन्होंने कभी भी वेदांत पर फिल्मों में आने का दबाव नहीं डाला। उनका मानना है कि प्रत्येक बच्चे को अपनी रुचि के अनुसार जीवन का रास्ता चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। यही सोच उन्हें एक जिम्मेदार पिता के रूप में भी अलग पहचान देती है। वेदांत की उपलब्धियों के दौरान कई अवसरों पर आर. माधवन स्वयं दर्शक दीर्घा में बैठकर उनका उत्साह बढ़ाते दिखाई दिए। उन्होंने बेटे के प्रशिक्षण के लिए विदेशों में भी समय बिताया और अपनी फिल्मी व्यस्तताओं के बीच उसके खेल जीवन को प्राथमिकता दी। यह उदाहरण बताता है कि सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद भी उन्होंने परिवार और बच्चों के भविष्य को समान महत्व दिया।

आज आर माधवन केवल एक सफल अभिनेता नहीं, बल्कि भारतीय सिनेमा में गरिमा, सादगी और उत्कृष्टता के प्रतीक बन चुके हैं। उन्होंने यह साबित किया कि लंबे समय तक सम्मान पाने के लिए लगातार प्रचार नहीं, बल्कि लगातार अच्छा काम आवश्यक होता है। पद्मश्री सम्मान ने उनके इसी योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया है। अभिनय, निर्देशन, सामाजिक जिम्मेदारी और पारिवारिक मूल्यों का जो संतुलन उन्होंने स्थापित किया है, वह उन्हें समकालीन भारतीय सिनेमा के सबसे सम्मानित कलाकारों की श्रेणी में खड़ा करता है। आने वाले वर्षों में भी उनसे ऐसी ही सार्थक और स्तरवान फिल्मों की अपेक्षा रहेगी, क्योंकि उन्होंने अपने पूरे करियर में यह सिद्ध किया है कि लोकप्रियता से कहीं अधिक स्थायी होती है उत्कृष्टता।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

इन दिनों तमाम टीवी चैनलों और राजनीतिक गलियारों में 'चोर' शब्द की धूम मची है। जब से राम मंदिर में दान पेटियों से चोरी की बात सामने आई है, महफिलों से लेकर मीडिया में सभी दूर

'चोर' का शोर सुनाई दे रहा है। पिछले दिनों चोर चोर शब्द सीमित था, लेकिन अब सारे देश में चंदा चोर की गूंज है। हिंदी फिल्मों में चोर का फार्मूला हमेशा से हिट रहा। यदि फिल्मों का इतिहास को टटोला जाए तो 'चोर' शीर्षक से बनी अधिकांश फिल्में या गाने हिट ही हुए हैं।

फिल्मों में बरसों से छाए चोरी के किस्से

फिल्मों में चोरी का फार्मूला हॉलीवुड से आया। हॉलीवुड में चोरी पर कई हिट फिल्में बनी। जिनमें 'हाऊ टू स्टील ए मिलियन डॉलर' जैसी फिल्मों की सफलता ने हिंदी सिनेमा के लिए चोरी के दरवाजे खोल दिए। अरेबियन नाइटस पर आधारित 'थीफ आफ बगदाद' भी हॉलीवुड में बहुत सफल रही थी। वहां चोरी पर आधारित फिल्मों में द इटालियन जॉब, ओशियंस इलेवन. द स्टिंग, इनसाइड मैन, हीट, द थॉमस क्राउन अफेयर, नाऊ यू सी मी, लोगान लकी, बेबी ड्राइवर, द टाऊन, रिफिफि और 'द स्कोर' ने बहुत नाम कमाया।

बॉलीवुड की पहली हिट फिल्म कहलाने का श्रेय 1943 में प्रदर्शित अशोक कुमार की 'किस्मत' को जाता है जिसने कोलकाता के एक सिनेमा हॉल में लगातार साढ़े तीन साल तक चलने का रिकॉर्ड बनाया जो 1975 में मराठा मंदिर में प्रदर्शित 'शोले' के लगातार पांच साल से ज्यादा चलने तक 32 साल तक कायम रहा। मजे की बात यह है कि एक नाम से बनी दोनों फिल्मों 'किस्मत' में अशोक कुमार ने चोर का किरदार निभाया था। वहीं, 'शोले' के दोनो नायक धर्मेंद्र और अमिताभ को भी चोर ही बताया गया था।

हिंदी फिल्मों में चोर का किरदार चरित्र एकदम ब्लैक शेड वाला न होकर ग्रे शेड वाला होता है, जो नायिका से लेकर दर्शकों तक का दिल जीतकर बॉक्स ऑफिस तक को लूटने में कामयाब होता है। कई फिल्में ऐसी भी होती हैं, जिनमें क्लाइमेक्स से पहले तक तो नायक को चोर दिखाया जाता है। लेकिन, आखिरी रील के आते-आते वह

पुलिस बन जाता है। 'ज्वेल थीफ' इसी तरह की सबसे ज्यादा मनोरंजक फिल्म थी, जिसमें दर्शक आखिर तक देव आनंद को चोर ही समझते रहते हैं। लेकिन, क्लाइमेक्स में अशोक कुमार को चोर के रूप में देखकर सब चौंक जाते हैं।

इसी 'ज्वेल थीफ' अशोक कुमार ने आरंभिक दिनों कई अपराधिक फिल्मों में चोर की भूमिका निभाई। उसके बाद देव आनंद लगभग हर दूसरी फिल्मों में चोर ही नहीं महिला दर्शकों के चितचोर भी बनें। राज कपूर ने 'आवारा' में चोर की भूमिका निभाकर दुनियाभर में वाहवाही लूटी तो उनके भाई शम्मी कपूर भी ज्यादातर फिल्मों में चोर बने। सबसे छोटे भाई शशि कपूर तो इससे एक कदम आगे निकले। वे एनसी सिप्पी की एक फिल्म में न केवल चोर बने, बल्कि चोर बनकर उन्होने 'चोर मचाए शोर' में खूब शोर भी मचाया और बॉक्स ऑफिस पर पैसा भी बटोरा।

फिल्मों के कई निर्माता-निर्देशकों को चोर

विषयों पर फिल्में बनाने या निर्देशित करने में महारत हासिल थी। गुरुदत्त गंभीर फिल्मकार बनने से पहले चोर विषय पर सीआयडी, ट्वेल ओ क्लॉक जैसी सफल फिल्म बना चुके थे। विजय आनंद, शक्ति सामंत, राज खोसला जैसे फिल्मकारों ने हिंदी फिल्मों में चोरों की खूब महिमा मंडित की। ऐसे ही निर्देशकों की बदौलत हिंदी फिल्मों के चोरों पर दर्शकों का खूब प्यार उमड़ा है। फिल्मों में शायद ही कोई अभिनेता हो, जो कभी चोर न बना हो। मनोज कुमार जैसा कलाकार भी बेईमान में चोर के चरित्र को निभा चुका है। अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, देव आनंद, शत्रुघ्न सिन्हा, राजेश खन्ना और धर्मेंद्र जैसे पुराने नायकों ने कई फिल्मों में चोर बनकर दर्शकों को लुभाया तो अब शाहरुख, सलमान और आमिर भी इस दौड़ में पीछे नहीं हैं। 'धूम' सीरीज की सारी फिल्मों का कथानक चोरों के इर्द गिर्द ही घूमता रहता है।

'चोर' शीर्षक से बनी फिल्मों में ज्वेल थीफ, चोरी मेरा काम, चोर चोर, दो चोर,, तू चोर मे सिपाही, हम सब चोर हैं, अलीबाबा चालीस चोर,चोर मचाए शोर, बंबई का चोर, चोर और चांद, चितचोर ,थीफ ऑफ बगदाद, बैंक चोर, नामी चोर, महा चोर और 'चोर बाजार' प्रमुख है। कुछ ऐसी फिल्में भी हैं जिनमें नायक तो शरीफ होता है लेकिन नायिकाएं चोर होती हैं। जीनत अमान, मुमताज, हेमा मालिनी और श्रीदेवी ऐसी भूमिकाओं में खूब फबती रही। नीतू सिंह की एक फिल्म का शीर्षक ही 'चोरनी' था।

फिल्मों के चोर केवल शीर्षक तक ही सीमित नहीं रहे। ऐसे कई गीत हैं जिन्हें चोर शब्द के प्रयोग ने हिट बनाया है। ऐसे गीतों में चुरा के दिल मेरा, चुरा लिया है तुमने जो दिल तो, मै एक चोर तू मेरी रानी, शोर मच गया शोर आया बिरज में आया माखन चोर, मेरी गली में आया चोर, इस दुनिया में सब चोर चोर, जब अंधेरा होता है आधी रात को एक चोर निकलता है। मैं एक चोर मेरी रानी और दिल चोरी हो गया की करिए को लोगों ने खूब सुना और गुनगुनाया है। सलीम जावेद ने तो अपनी फिल्म 'दीवार' में अमिताभ के हाथ पर 'मेरा बाप चोर है' लिखकर हिंदी सिनेमा में चोर को न केवल अमर कर दिया, बल्कि बॉलीवुड को चोर विषय पर हिट फिल्म बनाने का एक फार्मूला भी बता दिया है।

वायपर हो न हो... डायपर जरूरी है

प्रकाश पुरोहित

घर का सामान लेने जाओ तो, याद रखना, डायपर भी लाने हैं।'' पत्नी को याद दिलाया।

''हां याद है, बारिश है तो डायपर तो आने ही हैं, कौन-सी नई बात है।'' पत्नी ने जवाब दिया।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ये पति-पत्नी क्या बात कर रहे हैं, क्योंकि इनके घर में तो कोई बच्चा है नहीं, आस-पड़ौस में भी नहीं है। इनकी औलादें तो विदेशों में हैं, जो डायपर साथ लाते हैं, फिर ये डायपर खरीदने की बात क्यों कर रहे हैं। माना कि पुराने परिचित हैं, लेकिन कुछ तो भी नहीं पूछ सकते ना!

कई बार जुबान से ज्यादा आंखें और चेहरा सवाली हो जाता है। पति महाशय को मेरे चेहरे पर तैर रहा

अचरज और सवाल नजर आया तो हंस पड़े। ''सोच रहे होगे, इस उम्र में मुझे क्या जरूरत है डायपर की?

उन्होंने बताना शुरू किया ''जब से हमारे शहर में मेट्रो ट्रेन का काम शुरू हुआ है, डायपर जरूरी हो गया है।'' मुंह फाड़े आगे की बात सुनने को मैं उतावला हो गया। ''बाकी मौसम में तो फिर भी उतनी दिक्कत नहीं होती है, लेकिन बारिश में बहुत जरूरी हो जाता है डायपर।'' उन्होंने बताया या मुझे और उलझा दिया।

''बारिश में डायपर?'' मेरी भी हिम्मत खुलने लगी थी।

''हां, हमारे शहर में जहां-जहां से मेट्रो गुजरने वाली है, यदि आ उन इलाकों से निकल रहे हैं तो डायपर बहुत जरूरी है।''

''बरसात में छतरी या बरसाती तो जरूरी होती है, लेकिन इस डायपर का क्या उपयोग और मेट्रो ट्रेन से क्या लेना देना?'' मुझे लगा अब वे सब बताने को तैयार हैं तो मैंने पूछ लिया। मैं सही था, वे बताने लगे।

''दरअसल, हमारे शहर में मेट्रो का यह पहला विनम्र प्रयास है, हमें पता ही नहीं था कि क्या-क्या सावधानी रखना चाहिए। कहते हैं ना, अनुभव सब सिखा देता है। जब मेट्रो का काम शुरू हुआ था, तब बारिश में डायपर की मांग अचानक इतनी तेजी से बढ़ी कि ब्लैक में बिकने लगे थे। दूर शहरों से आने वालों से मिठाई या और कुछ लाने का कहने के बजाय यही कहा जाता था, जितने हो सके, डायपर लेते आना। हमारे यहां बारिश में सबसे अच्छी बर्थ-डे गिफ्ट डायपर ही है। अभी बारिश शुरू हुई है, यदि डायपर का स्टॉक नहीं किया तो फिर मिलना मुश्किल हो जाएगा, इतनी ज्यादा खपत होती है।'' उन्होंने लंबा-सा जवाब तो दिया, लेकिन मेरा सवाल तो फिर भी हवा में ही था कि बारिश में डायपर का क्या काम है।

''तुम्हारे शहर में मेट्रो नहीं आ रही है ना, तो तुम्हें यह पता नहीं चलेगा कि बारिश में डायपर कितने जरूरी हैं। यूं समझने की कोशिश करो कि हमारे शहर में मेट्रो के काम की वजह से हर चौराहे पर बाकी मौसम में यदि एकाध घंटे का ट्रैफिक जाम आम बात है, लेकिन जैसे ही बारिश का मौसम आता है, यह ट्रैफिक जाम दो से तीन घंटे का हो जाता है, क्योंकि हमारे शहर में यह भी प्राचीन परंपरा है कि ट्रैफिक-सिग्नल बंद होते ही लोग समझ जाते हैं कि बारिश होने वाली है। इधर बारिश ढंग से शुरू भी नहीं हो पाती है कि उधर बिजली चली जाती है। ऐसे में कर्तव्यनिष्ठ पुलिस की यह ड्यूटी बनती है कि मौका-ए-वारदात से भाग जाए। अब सड़क पर खड़ी गाड़ियों के कौशल पर निर्भर है कि वहां से कैसे और कब निकला जाए।'' कह कर उन्होंने यूं सांस ली, जैसे आगे वाली गाड़ी कुछ हिली हो।

''ऐसे में नैसर्गिक-पुकार यानी नेचरल-कॉल का आना तय रहता है। जिसे डायबिटीज ना हो, उसे भी तो प्रेशर बन सकता है। तब यह तो संभव ही नहीं है कि गाड़ी बंद की और निकल गए सुलभ शौचालय की खोज में। अर्जुन तो फिर भी चक्रव्यूह से निकल सकते थे, मगर यहां से निकल पाना नामुमकिन होता है। बताइए, ऐसे में गाड़ीवाला क्या करे, क्या अपनी गाड़ी और कपड़े खराब करे तो फिर विकल्प क्या बच रहता है कि डायपर के साथ ही घर से निकलें। डायपर होने से गंतव्य पर पहुंच कर इज्जत के खांखरे होने से बच जाते हैं।

''यह हमारे शहर के लिए अब अनिवार्य हो गया है कि यदि आप वाहन चालक हैं, बारिश हो रही है तो सावधानी बरतें और दो-चार डायपर अपने साथ वैसे ही लेकर चलें, जैसे नवजात के लिए मां लिए चलती है।''

उन्होंने विस्तार से डायपर के एनी उपयोग के बारे में जानकारी दी, तो मैं घबरा गया कि, मेरे पास तो डायपर है ही नहीं। वे समझ गए, उठे और डायपर का पैकेट ले आए ''ये पिछले साल के हैं, इसकी एक्सपायरी नहीं होती है, यही अच्छी बात है।''

घबरा कर जाग गया, ये सप्ताहांत में मुझे ऐसे ही भयावह सपने क्यों आते हैं, नहीं पता, लेकिन हां डायपर का यह उपयोग जरुर फायदेमंद होगा, मुझे उम्मीद है। आप भी कभी तो ऐसा करेंगे ही, जब तक कि मेट्रो पूरी नहीं हो जाती।

तस्वीरों में दर्ज समय का सत्य

समय की पदचाप

कुमार कृष्णन

लेखक स्तंभकार हैं।

इतिहास केवल लिखा नहीं जाता, वह देखा भी जाता है। कई बार किसी युग को समझने के लिए इतिहासकारों की पुस्तकों से अधिक विश्वसनीय वे छवियाँ होती हैं, जो अपने समय की अनायास साक्षी बन जाती हैं। शब्द इतिहास की व्याख्या करते हैं, जबकि तस्वीरें इतिहास की उपस्थिति का प्रमाण बनती हैं। यही कारण है कि आधुनिक इतिहास-लेखन में दृश्य-संस्कृति और फोटो पत्रकारिता का महत्व लगातार बढ़ा है। आज यह स्वीकार किया जा चुका है कि किसी समाज की सामूहिक स्मृति केवल दस्तावेज़ों, संस्मरणों और सरकारी अभिलेखों से निर्मित नहीं होती; उसमें कैमरे की आँख से दर्ज दृश्य भी उतने ही निर्णायक होते हैं।

भारतीय भाषाओं में फोटो पत्रकारिता पर गंभीर पुस्तकों का अभाव लंबे समय से महसूस किया जाता रहा है। पत्रकारों के संस्मरण तो उपलब्ध हैं, किंतु कैमरे के पीछे खड़े उस व्यक्ति की दृष्टि, संवेदना और इतिहास-बोध पर बहुत कम काम हुआ है, जिसने घटनाओं को दृश्य रूप में संरक्षित किया। इसी संदर्भ में रोहित कांत द्वारा संपादित 'द फोटो जर्नलिस्टः अ मेमॉयर ऑफ लेट राजीव कांत' तथा 'बिहार के छायाकार : स्व. राजीव कांत की छाया स्मृति' का प्रकाशन केवल एक पारिवारिक श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि भारतीय पत्रकारिता और दृश्य इतिहास के संरक्षण का उल्लेखनीय सांस्कृतिक उपक्रम है।

इन पुस्तकों को पढ़ते हुए सबसे पहले यह अनुभव होता है कि वे किसी व्यक्ति-विशेष का महिमामंडन नहीं करतीं, बल्कि एक पूरे दौर की पत्रकारिता की कार्य-संस्कृति को पुनर्जीवित करती हैं। यह वह समय था जब समाचार की विश्वसनीयता कैमरे के फ्रेम में तय होती थी, जब एक तस्वीर के लिए कई घंटे प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जब नेगेटिव की सीमित रील में हर क्लिक की कीमत होती थी, और जब फोटो पत्रकारिता तकनीकी कौशल से अधिक धैर्य, संवेदना और नैतिक जिम्मेदारी का प्रश्न थी। आज के डिजिटल युग में, जहाँ छवियाँ क्षणों में बनती और विस्मृत हो जाती हैं, वहाँ ये पुस्तकें हमें उस पत्रकारिता की याद दिलाती हैं जिसमें तस्वीरें खबर से अधिक इतिहास का हिस्सा बनती थीं।

राजीव कांत की विशेषता केवल यह नहीं थी कि उन्होंने अनेक ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की तस्वीरें खींचीं। उनकी वास्तविक पहचान इस बात में है कि उन्होंने सत्ता और समाज के बीच के संबंधों को कैमरे की दृष्टि से समझा। उनके यहाँ जयप्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर, इंदिरा गांधी, चंद्रशेखर या जॉर्ज फर्नांडिस जितने महत्वपूर्ण हैं, उतना ही महत्व एक किसान, नाविक, मजदूर, लोक कलाकार या मेले में उमड़ी भीड़ का भी है। यह दृष्टि उन्हें सत्ता-केंद्रित फोटो पत्रकारिता से अलग करती है। वे घटनाओं के नहीं, समय के छायाकार हैं।

यहीं से इन पुस्तकों का वैचारिक महत्व आरंभ होता है। वे केवल दुर्लभ तस्वीरों का संग्रह नहीं हैं; वे इस प्रश्न को भी सामने लाती हैं कि इतिहास किन चेहरों को याद रखता है और किन्हें भुला देता है। राजीव कांत के कैमरे में बार-बार लौटकर आने वाला आम आदमी दरअसल उसी विस्मृत इतिहास का प्रतिनिधि है, जिसे प्रायः मुख्यधारा की राजनीति और इतिहास-लेखन में पर्याप्त स्थान नहीं मिलता। इस अर्थ में उनकी तस्वीरें लोकतांत्रिक हैं। वे सत्ता के वैभव से अधिक समाज की धड़कनों को दर्ज करती हैं।

इन दोनों पुस्तकों का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे दृश्य-स्मृति को निजी संग्रह से निकालकर सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाती हैं। भारत में दृश्य अभिलेखों के संरक्षण की संस्कृति अभी भी पर्याप्त विकसित नहीं हो सकी है। अनेक महत्त्वपूर्ण फोटो पत्रकारों के नेगेटिव समय के साथ नष्ट हो गए या निजी अलमारियों में बंद रह गए। ऐसे समय में रोहित कांत द्वारा हजारों नेगेटिवों का व्यवस्थित डिजिटलीकरण, उनका चयन और पुस्तकाकार प्रस्तुतिकरण केवल संपादकीय श्रम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व का उदाहरण है। यह कार्य स्मृति को संरक्षित करने के साथ-साथ इतिहास के स्रोतों का विस्तार भी करता है।

इन पुस्तकों को पढ़ते हुए बार-बार फ्रांसीसी विचारक रोलां बार्थ की उस स्थापना की याद आती है कि प्रत्येक तस्वीर अपने भीतर 'यह घटित हुआ था' का प्रमाण लेकर आती है। राजीव कांत की तस्वीरें भी इसी अर्थ में महत्वपूर्ण हैं। वे किसी घटना का कलात्मक पुनर्निर्माण नहीं करतीं, बल्कि उसके अस्तित्व की गवाही देती हैं। इसलिए उनके छायाचित्रों का मूल्य केवल सौंदर्यबोध में नहीं, बल्कि ऐतिहासिक प्रामाणिकता में निहित है। यही कारण है कि पुस्तक के अनेक चित्र पाठक को देखने के साथ-साथ सोचने के लिए भी विवश करते हैं।

फिर भी इन पुस्तकों की सबसे बड़ी उपलब्धि किसी एक तस्वीर या किसी एक संस्मरण में नहीं, बल्कि उस वातावरण की पुनर्रचना में है जिसे आज की पीढ़ी ने देखा ही नहीं। यहाँ कैमरे की तकनीक से अधिक पत्रकारिता का नैतिक विवेक

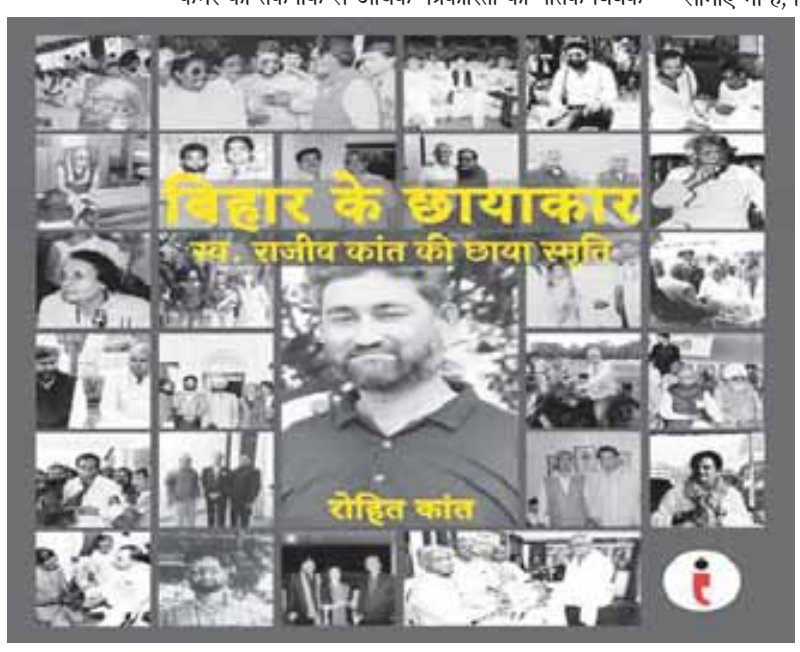

दिखाई देता है। यहाँ समाचार से अधिक समाज उपस्थित है और व्यक्ति से अधिक समय। यही गुण इन पुस्तकों को साधारण स्मृति-ग्रंथों से अलग करता है और उन्हें बिहार की दृश्य-संस्कृति के दुर्लभ अभिलेख का दर्जा प्रदान करता है।

इन पुस्तकों का सबसे उल्लेखनीय पक्ष यह है कि वे पाठक को केवल अतीत की यात्रा पर नहीं ले जातीं, बल्कि यह सोचने के लिए भी विवश करती हैं कि स्मृति का निर्माण कैसे होता है। इतिहास जिन घटनाओं को शब्दों में सुरक्षित करता है, कैमरा उन्हें दृश्य रूप में संरक्षित करता है। किंतु दृश्य भी कभी निष्पक्ष नहीं होते; उनके पीछे छायाकार की दृष्टि, उसका चुनाव और उसका सामाजिक विवेक सक्रिय रहता है। राजीव कांत की तस्वीरों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि उनका कैमरा दृश्य का उपभोग नहीं करता, बल्कि उसके भीतर छिपे सामाजिक अर्थों की तलाश करता है। यही कारण है कि उनके छायाचित्रों में दृश्यात्मक आकर्षण से अधिक मानवीय गरिमा दिखाई देती है।

पुस्तकों में संकलित अनेक तस्वीरें बिहार के राजनीतिक इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। जयप्रकाश नारायण के आंदोलन की बेचैनी, कर्पूरी ठाकुर का सहज जननायकत्व, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के दौर की राजनीतिक हलचल, चंद्रशेखर की वैचारिक प्रतिबद्धता, जॉर्ज फर्नांडिस का संघर्षशील व्यक्तित्व और रामविलास पासवान की जनसंपर्क क्षमता—ये सब कैमरे में केवल व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि अपने-अपने समय के राजनीतिक प्रतीकों के रूप में दर्ज हैं। किंतु पुस्तक की सबसे बड़ी शक्ति इन तस्वीरों से भी आगे जाकर उन चेहरों में दिखाई देती है जिनके नाम इतिहास की पुस्तकों में प्रायः अनुपस्थित रहते हैं। खेतों में श्रमरत किसान, नाव खेता मल्लाह, लोक कलाकार, बाढ़ और सूखे से जूझते लोग, गंगा के घाटों का जीवन, ग्रामीण मेले, लोक उत्सव और शहरों की साधारण हलचल—ये सभी मिलकर बिहार के उस सामाजिक भूगोल का निर्माण करते हैं, जिसे राजनीतिक इतिहास अक्सर नज़रअंदाज़ कर देता है।

रोहित कांत का संपादकीय श्रम विशेष उल्लेख का अधिकारी है। किसी फोटो पत्रकार की विरासत केवल तस्वीरों तक सीमित नहीं होती; उसके नेगेटिव, उनकी क्रमबद्धता, पहचान और संदर्भ भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं। हजारों नेगेटिवों का डिजिटलीकरण, उनका संरक्षण और फिर उनका सुविचारित चयन अत्यंत कठिन कार्य है। यह श्रम केवल पुत्रधर्म का निर्वाह नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व का परिचायक है। इस दृष्टि से ये पुस्तकें निजी स्मृति को सार्वजनिक धरोहर में रूपांतरित करने का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

'बिहार के छायाकार : स्व. राजीव कांत की छाया स्मृति' की एक अतिरिक्त विशेषता इसमें शामिल संस्मरण हैं। विभिन्न पत्रकारों, साहित्यकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और समकालीन सहयोगियों की टिप्पणियाँ राजीव कांत के व्यक्तित्व को बहुआयामी बनाती हैं। वे केवल एक दक्ष फोटो पत्रकार नहीं, बल्कि विनम्र, संवादशील और पेशे के प्रति गहरे समर्पित व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। दूसरी ओर 'द फोटो जर्नलिस्टः अ मेमॉयर ऑफ लेट राजीव कांत' उनकी पेशेवर यात्रा को व्यापक पाठक समुदाय के सामने रखती है। इस प्रकार दोनों पुस्तकें मिलकर दृश्य और शब्द, दोनों स्तरों पर एक समग्र स्मारक का निर्माण करती हैं।

हालाँकि, एक गंभीर समीक्षा का दायित्व केवल उपलब्धियों की चर्चा करना नहीं है। इन पुस्तकों की कुछ सीमाएँ भी हैं, जिनकी ओर संकेत किया जाना आवश्यक है। सबसे पहले, अनेक दुर्लभ छायाचित्रों के साथ दिए गए विवरण अपेक्षाकृत संक्षिप्त हैं। यदि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण तस्वीर के साथ तिथि, स्थान, प्रकाशन-संदर्भ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उस क्षण की परिस्थितियों पर विस्तार से टिप्पणी दी जाती, तो इन पुस्तकों का शोध-मूल्य कई गुना बढ़ जाता। भविष्य में यदि इनका संशोधित संस्करण प्रकाशित हो, तो यह पक्ष अवश्य समृद्ध किया जाना चाहिए।

दूसरा, इन पुस्तकों में राजीव कांत की कार्य-पद्धति, कैमरे की भाषा, फ्रेम-निर्माण, प्रकाश के उपयोग, निर्णायक क्षण की पहचान और उनकी दृश्य-दृष्टि पर अपेक्षित आलोचनात्मक विमर्श अपेक्षाकृत कम है। आज जब दृश्य-संस्कृति और फोटो पत्रकारिता पर गंभीर अकादमिक अध्ययन उपलब्ध हैं, तब इन पहलुओं पर एक स्वतंत्र आलोचनात्मक निबंध पुस्तक को और अधिक प्रामाणिक संदर्भ-ग्रंथ बना सकता था। इससे पाठक केवल तस्वीरें देखता नहीं, बल्कि यह भी समझता कि एक उत्कृष्ट फोटो पत्रकार अपने समय को किस तरह पढ़ता और रचता है।

इसके अतिरिक्त, पुस्तक में यदि बिहार की फोटो पत्रकारिता की परंपरा, उसके प्रमुख छायाकारों और उस दौर की मीडिया-संस्कृति पर एक परिचयात्मक अध्ययन भी जोड़ा जाता, तो राजीव कांत का योगदान व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में और स्पष्ट होकर सामने आता। इससे उनका कार्य व्यक्तिगत उपलब्धि से आगे बढ़कर एक संस्थागत विरासत के रूप में स्थापित होता।

फिर भी, ये सीमाएँ पुस्तक की मूल उपलब्धि को कम नहीं करतीं। सच तो यह है कि हिंदी में दृश्य-संस्कृति पर गंभीर प्रकाशनों का अभाव इतना व्यापक है कि यह कार्य अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण शुरुआत है। यह केवल एक फोटो पत्रकार का स्मरण नहीं, बल्कि उस पत्रकारिता का पुनर्स्मरण है जिसमें समाचार बाज़ार की वस्तु नहीं, लोकतंत्र की स्मृति हुआ करता था।

आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ ही क्षणों में ऐसी छवियाँ बना रही है जिनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता, तब राजीव कांत का कैमरा हमें सत्य और दृश्य के संबंध पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करता है। उनकी तस्वीरें निर्मित यथार्थ नहीं, बल्कि जीए गए यथार्थ की साक्षी हैं। वे यह विश्वास जगाती हैं कि तकनीक चाहे जितनी विकसित हो जाए, इतिहास अंततः उसी छवि पर भरोसा करेगा जिसके पीछे ईमानदार दृष्टि और मानवीय संवेदना होगी।

अंततः, 'द फोटो जर्नलिस्टः अ मेमॉयर ऑफ लेट राजीव कांत' और 'बिहार के छायाकार : स्व. राजीव कांत की छाया स्मृति' को केवल श्रद्धांजलि-ग्रंथ कह देना उनके महत्व को सीमित कर देना होगा। ये पुस्तकें बिहार की सामूहिक दृश्य-स्मृति का ऐसा अभिलेख हैं, जिनमें एक प्रदेश का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास साँस लेता है। पत्रकारिता, इतिहास, मीडिया अध्ययन, दृश्य-संस्कृति और स्मृति-अध्ययन के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा गंभीर पाठकों के लिए ये दोनों कृतियाँ संग्रहणीय ही नहीं, बल्कि संदर्भ-मूल्य की दृष्टि से भी अनिवार्य हैं।

राजीव कांत ने अपने कैमरे से केवल तस्वीरें नहीं खींचीं; उन्होंने समय को क्षय होने से बचाया। रोहित कांत ने उन बिखरी हुई स्मृतियों को पुस्तकाकार रूप देकर उन्हें नई पीढ़ी की बौद्धिक विरासत बना दिया। यही इन पुस्तकों की सबसे बड़ी उपलब्धि है, और यही उन्हें समकालीन हिंदी की उल्लेखनीय पुस्तक-संपदा में विशिष्ट स्थान दिलाती है।

मजबूती और मुश्किल के बीच... !

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इंग्लैंड में प्रधानमंत्री का चुनाव हैं। रिफार्म पार्टी लीडर नाइजेल फराज ने इस्तीफा दिया और अब चुनाव का इंतजार है। नाइजेल फराज ने एक्सट्रीम राइट पार्टी रिफार्म बनाई। लोकल चुनाव में जीत भी। फराज पहले टोरी पार्टी में थे। ब्रेक्सिट के दौर में इन्होंने लोगों को बरगलाने में कसर नहीं छोड़ी और नतीजा दुनिया के सामने है। इन्हें टोरी पार्टी में तवज्जो नहीं मिली तो रिफार्म पार्टी बना ली और अंदर का जहर जहां जगह मिले, वहां छोड़ते हैं।

फराज को पचास लाख पाउंड्स का डोनेशन मिला, लेकिन सारा पैसा इनके खाते में गया। किस-किस काम के कितने पैसे मिलते रहे, जोड़ा जाए तो अमीर साबित होते हैं। फराज ने कहा- मैंने कुछ गलत नहीं किया और इसीलिए इस्तीफा देता हूं। फिर लडूंगा। उन्हें लगा होगा कि बाकी सभी दल इस चुनाव में उम्मीदवार उतारेंगे, लेकिन सभी ने दूरी बना ली है। मजाहिया उम्मीदवार काउंट बिनफेस (उर्फ कचरे के डिब्बे के चेहरे वाला) फराज के खिलाफ चुनाव में हैं। काउंट बिनफेस कई बार दावेदारी पेश चुके हैं लेकिन कभी किसी ने उनका इंटरव्यू नहीं लिया, पर इस बार हर चैनल पर हैं। उनसे पूछा- आपको क्यों लगता है कि जनता वोट देगी तो जवाब आता है, क्योंकि मैं फराज नहीं हूं। बिनफेस खुद को एलियन बताते हैं। उनकी नीतियां अजीब हैं- जैसे सीफैक्स को वापस लाना, एडेल का राष्ट्रीयकरण करना और पब्लिक ट्रांसपोर्ट में बिना हेडफोन के तेज़ आवाज में संगीत बजाने वालों को सजा (सच कहें तो इसी आखिरी बात से उन्हें जीत मिल सकती है)। जून में उन्हें काफी चर्चा मिली थी, जब उन्होंने मेकरफील्ड उपचुनाव में एंडी बर्नहम (जो यूके के अगले प्रधानमंत्री के तगड़े उम्मीदवार हैं) के खिलाफ

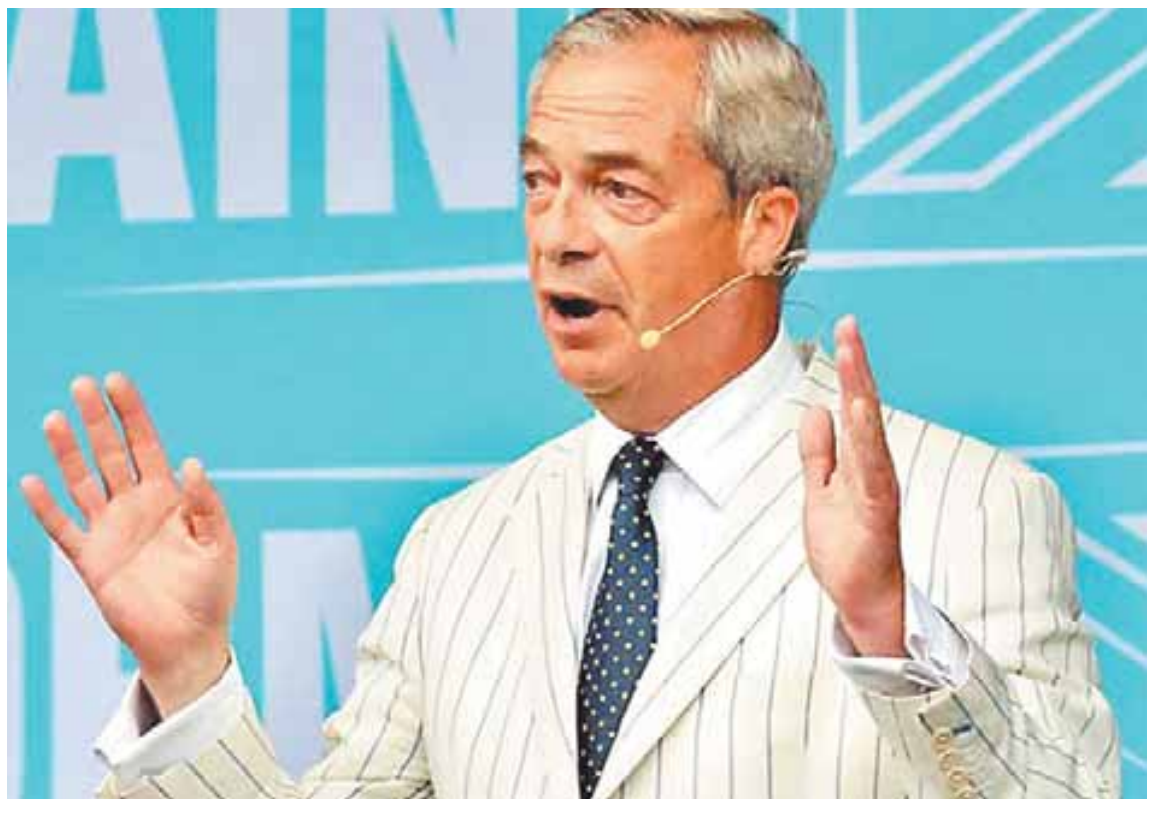

चुनाव लड़ा था। बिनफेस पहले भी पूर्व प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और ऋषि सुनक के खिलाफ लड़ चुके हैं।

काउंट बिनफेस उर्फ जॉन हार्वे जब कचरे के डिब्बे का कॉस्ट्यूम नहीं पहने होते तो ससेक्स में पत्नी सारा और बच्चों के साथ रहते हैं। उन्होंने बताया कि जब से उनका सबसे छोटा बच्चा पैदा हुआ है, लिविंग रूम में सो रहे हैं ताकि बच्चे के साथ सारा आराम से सो सके। कहा कि मेरी पत्नी और मैं फ्रीलांसर हैं, इसलिए हमारी कमाई में उतार-चढ़ाव हो सकता है। घर की कमाई मुझ पर ही निर्भर है, जिससे अलग तरह का दबाव है, खासकर अब जब मैं दो बच्चों का पिता हूं।

संसद में बार-बार दोहराया कि नाइजेल फराज का इस्तीफा मंजूर न किया जाए और उनके खिलाफ जो जांच चल रही है उसे पूरा होने दिया जाए, लेकिन लगता नहीं ऐसा होगा। अभी जो हालात हैं, चुनाव होंगे और अगर कहीं फराज फिर से जीत गए तो फिर जांच के बाद संसद से निकाले जाएंगे, क्योंकि पैसे तो इन्होंने कई जगह से लिए हैं। अगर नहीं जीते तो माउंट बिनफेस से हारना मतलब राजनीतिक करियर खत्म। कहना मुश्किल है कि आने वाले हफ्तों और महीनों में फराज और मजबूत होंगे या फिर उनकी मुश्किलें और बढ़ेंगी।